सनातन धर्म एवं विज्ञान
सग्रहकर्ता – रोबिन सिराना

प्रिय बंधु–मित्रों,

आपके जीवन में हर समय कोई–न–कोई कार्य कलाप चलता ही रहता है। जिसमें अनेकों कार्य ऐसे होते हैं। जिसमें अनेकों कार्य ऐसे होते हैं कि हम अपने पूर्वजों के सिखाए अनुसार करते हैं, किन्तु क्यों करते हैं, इसका उत्तर शायद ही किसी को भली–भांति मालूम हो, इसी क्यो? को ध्यान में रखते हुए यह पुस्तक आपके हाथों में देते हुए हमें अपार खुशी हो रही है।

भारतीय संस्कृति (सनातम धर्म) की जितनी मान्यताएं हैं उन्हें ऋषि–मुनियों और विद्वानों ने यूं ही बना दिया है या उन मान्यताओं के पीछे कोई वैज्ञानिक रहस्य भी छिपा है। पूजा–पाठ, यज्ञ, हवन, देवी–देवताओं का पूजन आदि क्या केवल धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ही किया जाता है शायद नहीं। इन पूजन के पीछे अवश्य ही अन्य कोई रहस्य भी है। वे रहस्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उचित है या अनुचित। यह जानने के लिए यह छोटी सी है या अनुचित। यह जानने के लिए यह छोटी सी पुस्तक अवश्य पढ़ें।

गंगाजल अति पावन (पवित्र) क्यों कहा जाता है?

गंगा को देवताओं की नदी कहते हैं। इसके जल में कभी कीड़े नहीं पड़ते। इसका उद्गम स्थल 'गोमुख' है जिस कारण इसका जल पवित्र माना जाता है।

कुश को धारण करने का वैज्ञानिक पक्ष क्या है?

कुश नान–कंडक्टर होता है। इसीलिए पूजा पाठ, जप, होम आदि करते समय कुश का आसन बिछाते हैं और पवित्री स्वरूप हाथ की उंगली में धारण करते हैं जिससे बार–बार हाथ को इधर–उधर करने आदि से भूमि कान स्पर्श हो अन्यथा संचित शक्ति 'अर्थ' होकर पृथ्वी में चली जायेगी। अगर भूलवश हाथ पृथ्वी पर पड़ भी जाये तो भूमि से कुश का स्पर्श होगा।

दिन में सोना चाहिए या नही?

दिन में कदापि नहीं सोना चाहिए। आयुर्वेद के कथनानुसार दिन में सोने से आयु क्षीण (घटती है) होती है। केवल ग्रीष्म ऋतु दिन में सो सकते हैं, लेकिन आधा घंटा दोपहर के खाने के बाद, यदि रजस्वला स्त्री दिन में सोती है और ऋतु काल में उसे गर्भ रह जाये तो भविष्य में पैदा होने वाला शिशु बहुत अधिक सोने वाला होता है।

रजस्वला का क्या अर्थ होता है?

रजोदर्शन से रजोनिवृत्ति के चार दिनों के मध्य काल में स्त्री को 'रजस्वला' कहते हैं।

रजोदर्शन क्या है?

रजो निवृत्ति के बाद तेरहवें दिन से 17वें दिन के मध्य स्त्रियों में अण्डाणु तैयार होते हैं जो शुक्राणुओं का इन्तजार करते हैं। उचित समय पर सम्पर्क न होने से वे टूटे जाते हैं। कटारे के रूप के रूप में हर 28 दिन पर रक्त के साथ योनि मार्ग से बाहर निकल जाते हैं, इस क्रिया को रजोदर्शन कहते हैं।

रजस्वला स्त्री को लोग अछूत क्यों मानते हैं?

अछूत अथवा अस्पृश्य का अर्थ है जो छूने योग्य न हो। रजस्वला स्त्री के हाथ का छुआ जल पीन भी लोग अपवित्र मानते हैं। उसकी ऐसी स्थिति चार दिनों तक होती है। रजस्वला स्त्रियों के छूने से दूध खराब हो जाता है। इनके स्पर्श से जल भी संक्रामक हो जाता है। 'रज' दुर्गन्ध युक्त होता है जिससे स्वच्छ वस्तु संक्रमिक हो जाता है किन्तु अब ज्यादातर लोग इन बातों को दकियानूसी मानते हैं जबकि इस तथ्य को वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है। रजस्वला स्त्री के स्पर्श से फूल भी मुरझा जाते हैं। उपरोक्त को देखते हुए रजस्वला स्त्री को अस्पृश्य माना जाता है।

रजस्वला स्त्री को कौन-कौन से कार्य नहीं करने चाहिए और क्यों? कारण सहित स्पष्ट करें।

- रजस्वला स्त्री को काजल नहीं लगाना चाहिए। धन्वन्तरि कहते हैं। काजल लगाने वाली रजस्वला स्त्री को अन्धा बच्चा पैदा होता है।
- ऐसी स्त्री को तेल मालिश नहीं करानी चाहिए। संतान कोढ़ी उत्पन्न होती है।
- रजस्वला स्त्री के अधिक हँसने से काले होंठ वाला एवं विकृत जिह्वा वाली सन्तान पैदा होती हैं।
- रजस्वला स्त्री के अधिक बोलने से बकवादी संतान उत्पन्न होती हैं।
- रजस्वला स्त्री के रोने से विकृत दृष्टि वाली संतान उत्पन्न होती है।

- रजस्वला स्त्री को दौड़ना नहीं चाहिए क्योंकि इससे चंचल स्वभाव वाली संतान उत्पन्न होती है।
- जो रजस्वला स्त्री भंयकर स्वर का गीत संगीत सुनती है। उसकी संतान बहरी होती है।
- रजस्वला को अनुलेपन नहीं करना चाहिए अन्यथा पांडु रोग से ग्रस्त संतान उत्पन्न होगी ।
- अधिक वायु सेवन करने वाली रजस्वला स्त्री की संतान पागल होती है।
- उपरोक्त तथ्यों पर लोग ध्यान नहीं देते और विकृत संतान उत्पन्न होने पर अपने भाग्य को कोसते हैं।

'ऋतुस्नाता' का क्या तात्पर्य है तथा ऋतुस्नाता स्त्री को क्या करना चाहिए?

रजीनिवृति के बाद चौथे दिन जब स्त्री विधिपूर्वक स्नान करती है तो उसे 'ऋतुस्नाता' कहते हैं। ऋतुस्नाता स्त्री स्नान आदि करने के बाद जिस पुरुष का प्रथम दर्शन करती हैं, उस पुरुष जैसी ही उसकी संतान उत्पन्न होगी अतः ऋतुस्नाता स्त्रियों को भरसक अपने पति का दर्शन करने का प्रयास करना चाहिए।

लिखित प्रमाण मिलता है कि भगवान श्री राम बारह कलाओं से युक्त होकर अवतरित हुए थे और श्री कृष्ण जी सोलह कलाओं से युक्त होकर। यह कलाओं का क्या चक्कर है? क्या भगवान जी छोटे-बड़े होते हैं?

श्री राम जी ने अपने अवतार में भगवान जैसा रूप नहीं दर्शाया है बल्कि उन्होंने मानव के लिए आदर्श प्रस्तुत किया है इसीलिए उन्हें पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी कहते हैं।

पुरुषोत्तम शब्द दो शब्दो को जोड़ने से बना है। (पुरुष+उत्तम) अर्थात् पुरुषोत्तम, जो पुरुषों में उत्तम आदर्श प्रस्तुत करे वही पुरुषोत्तम कहलाता है; किन्तु श्री कृष्णचन्द्र जी अवतार ग्रहण करते ही अपना दैवीय रुप प्रस्तुत करने लगे जैसे उनके जन्म लेते ही देवकी और वासुदेव की हथकड़ियां स्वतः खुल गयीं, पहरेदार आदि सो गये।

श्री रामचन्द्र जी को विष्णु का अवतार मान लिया जाये तो उसी काल में परशुराम श्री विष्णु के अवतार के रूप में अवतरित हुए और सीता स्वयंवर में उनके मध्य वार्ता भी हुई। भगवान विष्णु का एक समय में दो रूपों में अवतार कैसे हुआ?

श्री राम और परशुराम जी का एक ही समय में अवतरित होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। एक प्रसंग आपने महाभारत काल का सुना या पढ़ा होगा कि जब युधिष्ठिर की ओर से भगवान श्री कृष्ण शान्ति स्थापना हेतु दूत बनकर गये तो अभिमानवश दुर्योधन ने कहा–पकड़ लो इस ग्वाले को। जान न पाये। उस समय दुर्योधन का आदेश पाकर जब सारे दरबारी श्री कृष्ण को पकड़ने दौड़े तो उन्हें अनेकों कृष्ण दिखाई देने लगे। उसी तरह एक साथ भगवान के एक दो नहीं बल्कि आवश्यकतानुसार अनेकों अवतार हो सकते हैं।

ताम्रपात्र (तांबे के पात्र) में भोजन करना चाहिए या नहीं।

ताम्र पात्र में भोजन करना निषिद्ध माना गया है क्योंकि सनातन धर्म की मान्यता के अनुसार ताम्रपात्र केवल देवपूजन के प्रयोग में लाया जाता हैं।

वैज्ञानिक कारण – ताम्र पात्र में जल के अतिरिक्त अन्य पदार्थ रखने पर भोजन और तांबे के पात्र में रासायनिक अभिक्रिया होने लगती है। जिससे पात्र में रखा हुआ भोज्य पदार्थ विकृत होने लगता है।

व्रत-उपवास रखने का धार्मिक एवम् वैज्ञानिक कारण बताइये। व्रत-उपवास रखने से क्या होता है?

धार्मिक विचारधारा के अनुसार देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए व्रत–उपवास रखना चाहिए। देवी–देवता प्रसन्न होने पर भक्त को मनोवांछित फल प्रदान करते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उपवास रखने का कारण यह है कि 'अन्न' में एक प्रकार का नशा होता है, मादकता होती है। भोजन करने के बाद आप स्वयं अनुभव करते होंगे कि 'आलस्य' आता है। कभी–कभी पेट में गैस, या खट्टी डकार आने जैसे विकार भी उत्पन्न हो जाते हैं। शरीर के सौष्ठव को बनाये रखने और अन्न की मादकता को कम करने का एकमात्र साधन है उपवास। आज के अत्याधुनिक फैशनपरस्त युग में लोग 'डायटिंग' भी करते है। मोटापा कम करने के लिए भी उपवास व्रत रखते हैं। कैंसर एवं पथरी के रोगी 7 दिन में एक बार उपवास जरुर रखे।।

भोजन के उपरान्त घूमना, टहलना चाहिए अथवा बिस्तर पर लेटकर आराम करना चाहिए।

भोजन ग्रहण करने के पश्चात् कम से कम सौ से पाँच सौ कदम चलना अति आवश्यक है। चलने से भोजन यदि आहारनाल में कही थोड़ा बहुत फंसा भी होता है तो वह आसानी से पेट में पहुँच जाता है। जबकि सोने से उसी स्थान पर रुका रह जाता है। भोजन करके आहार नाम में कभी–कभी समस्या भी

उत्पन्न हो जाती है। भोजन करके तुरन्त सोने से कई प्रकार के रोग उत्पन्न हो सकते हैं और बैठे रहने से पेट बढ़ जाता है।

भोजन के तुरन्त बाद पानी पीना चाहिए या नहीं?

भोजन के (30 मिनट) पहले पानी पीना अमृत समान है और भोजन के बाद पानी पीना विष के समान है, अतः भोजन करने के 1 घंटे पश्चात् ही पानी पियें।

वैज्ञानिक कारण – भोजन करने के पश्चात् शरीर में एक प्रकार की ऊष्णता (गर्मी) का अनुभव करते हैं। ऐसा क्यों? क्योंकि अन्न में गर्मी होती है और वह गर्मी पेट में भोजन के माध्यम से पहुँचती है। जठराग्नि उस भोजन को पचाने के कार्य में लग जाती है तथा अन्न की गर्मी से उत्पन्न गैस अपने मार्गों से बाहर निकलती है जबकि तुरन्त बाद पानी पीने से निकलने वाली ऊष्णता पानी की शीतलता से दब जाती है और बाद में अनेक प्रकार के विकार रोगों के रूप में उत्पन्न होते हैं।

पूजा-कथा, आरती एवम् अन्य धार्मिक कार्य करते समय सनातनी (हिन्दू) लोग शंख फूँकते हैं, क्यों?

शंख फूँकने के पीछे सनातन धर्म की पूर्ण रूप से धार्मिक आस्था निहित है। अथर्ववेद, 4/10/2 के अनुसार शंख की ध्वनि जहाँ तक पहुँचती है वहाँ तक के राक्षसों का नाश हो जाता है। युद्ध क्षेत्र में शंख फूँककर एक प्रकार से शत्रु को ललकारने के साथ उसके हृदय में भय उत्पन्न करने का कार्य करते हैं। महाभारत में कृष्ण जी की शंख ध्वनि सुनकर कौरवों के हृदय काँप उठते थे। पूजा में शंख ध्वनि का तात्पर्य यह है कि जिस देवी अथवा देवता की पूजा कर रहे हैं, शंख ध्वनि करके उनका जयकारा करते हैं।

वैज्ञानिक कारण- शंख ध्वनि करने वाले व्यक्ति को दमा की बीमारी, श्वास रोग, फेंफड़ों का रोग, इन्फ्लूएंजा आदि नहीं होता। यदि कोई व्यक्ति बोलने में हकलाता है तो उसे बार–बार शंख फूँकने दिया जाए। हकलाना कम हो जाएगा।

पूजा के पश्चात् प्रायः शंख का जल लोगों पर छिडकते हैं। क्यों?

पूजा के समय शंख में जल भरकर देव स्थान में रखें। उसके बाद उसमें चन्दन का टीका लगाए। चन्दन का टीका लगाने से शंख में भरा जल चन्दन की सुगन्ध से परिपूर्ण हो जाता है। तत्पश्चात् पूजा की समस्त सामग्रियों पर वह सुवासित जल छिड़कें तथा पूजा में उपस्थित व्यक्तियों के ऊपर छिड़कें। शंख में रखे जल को मंत्रोच्चार करते हुए छिड़कना चाहिए। जिससे कि समस्त वस्तुएं पवित्र हो जायें। ऐसी मान्यता है।

वैज्ञानिक कारण – शंख में कैल्सियम, फास्फोरस और गन्धक की मात्रा होती है। शंख में भरे जल को छिड़कने से वस्तुएँ रोगाणु रहित हो जाती हैं।

प्राणायाम क्या है? प्राणायाम से क्या कोई लाभ होता है?

प्राणायाम का अर्थ है श्वास का नियंत्रण इस क्रिया के तीन अंग होते हैं – 1. पूरक (पूरा श्वास भीतर खीचना), 2. कुंमक (श्वास को भीतर रोकना) और 3. रेचक (नियमित विधि से श्वास छोड़ना) ।

इन क्रियाओं का ज्ञान सिद्ध गुरु से ही प्राप्त करना चाहिए।

श्वास के व्यायाम से हृदय पुष्ट होता है और उसमें बल आता है। इसे चिकित्सा विज्ञान भी स्वीकार करता है। योग इस दिशा में और भी आगे बढ़ता है और चित्त एकाग्र–साधन के लिए प्राणायाम का निर्देश करता हैं, क्योंकि इस (प्राणायाम) के द्वारा शरीर और मन में दृढ़ता आती है जब तक श्वास की कृपा

चलती है तब तक चित्त भी उसके साथ चंचल रहता है। जब श्वास वायु की गति स्थगित हो जाती है तब मन भी निस्पंद या स्थिर हो जाता है। इस तरह प्राणायाम् के अभ्यास से योगी बहुत देर तक अपनी श्वास रोक सकता है और समाधि की अवधि को बढ़ा सकता है।

भगवान को प्रसाद क्यों चढ़ाते हैं?

प्रभु की कृपा से जो कुछ भी अन्न–जल हमें प्राप्त होता है उसे प्रभु का प्रसाद मानकर प्रभु को अर्पित करना, कृतज्ञता प्रकट करने के साथ मानवीय सद्‌गुण भी है। भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण किया जाने वाला अन्न दिव्य माना जाता है। भगवान् को प्रसाद चढ़ाना आस्तिक होने के गुण को परिलक्षित करता है।

क्या जो प्रसाद भगवान् को चढ़ाया जाता है, उस प्रसाद को वे खाते हैं। यदि खाते हैं तो घटता क्यों नहीं?

श्रीमद् भगवद् गीता में भगवान् श्री कृष्ण चन्द्र जी कहते है कि जो कोई भक्त प्रेमपूर्वक फूल, फल, अन्न, जल आदि अर्पण करता है, उसे मैं प्रेमपूर्वक सगुण रूप में प्रकट होकर ग्रहण करता हूँ। भक्त की भावना हो तो भगवान एक बार नहीं बल्कि अनेकों बार उपस्थित होकर भोजन ग्रहण (खाते) करते हैं। प्रमाण स्वरूप शबरी, द्रौपदी, विदुर, सुदामा आदि हैं। भगवान ने प्रेमपूर्वक इनके हाथों भोजन किया। मीराबाई के विष का प्याला भगवान् स्वयं पी गये। कुछ लोग तार्किक बुद्धि का उपयोग करते हुए कहते हैं कि जब भगवान् खाते हैं तो चढ़ाया हुआ प्रसाद क्यों नहीं घटता? उनका कथन सत्य भी है जिस प्रकार पुष्पों पर भ्रमर (भौरें) बैठते हैं और पुष्प की सुगन्ध से तृप्त हो जाते हैं किन्तु पुष्प का भार नहीं घटता, उसी तरह भगवान की सेवा में चढ़ाया गया प्रसाद अमृत होता है। व्यंजन की दिव्य सुगंध और भक्त के प्रेम से ही भगवान् तृप्त हो जाते हैं। इस तरह भगवान तृप्त भी हो जाते हैं और प्रसाद भी नहीं घटता।

उत्तर दिशा में सिर करके नहीं सोना चाहिए। क्यों?

क्योंकि सनातन धर्म की धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मृतक का सिर उत्तर दिशा की ओर रहता है।

वैज्ञानिक कारण – उत्तरी ध्रुव चुम्बकीय क्षेत्र का सबसे शक्तिशाली ध्रुव है। उत्तरी ध्रुव के तीव्र चुम्बकत्व के कारण, मस्तिष्क की शक्ति क्षीण हो जाती है अतः उत्तर की ओर सिर करके कदापि न सोयें।

मृतक का सिर उत्तर दिशा की ओर क्यों रखते हैं?

मृत्युकाल के समय प्राणी (मनुष्य) को उत्तर की ओर सिर करके इसलिए लिटाते हैं कि प्राणों का उत्सर्ग दशम द्वार से हो। चुम्बकीय विद्युत प्रवाह की दिशा दक्षिण से उत्तर की ओर होती है। कहते हैं कि मरने के बाद भी कुछ क्षणों तक प्राण मस्तिष्क में रहते हैं। अतः उत्तर दिशा में सिर करने से ध्रुवाकर्षण के कारण प्राण शीघ्र निकल जाता हैं।

मृत्यु किन दिनों में हो तो उत्तम है किन दिनों में मृत्यु होना निन्दनीय होता है?

शुक्ल पक्ष, दिन और उत्तरायण के छः महीनों में मृत्यु हो तो प्राणी की आत्मा ब्रह्मलोक में पहुँचकर ब्रह्म में विलीन हो जाती है जबकि दक्षिणायण के छः महीनों में जिनकी मृत्यु होती है वे चन्द्र लोग तक जाकर पुनः मृत्युलोक में जन्म लेते हैं।

पूजा पाठ में अनेक स्थान पर ऐसे आदेश निर्देश मिलते हैं कि यह वस्तु इस देवता पर चढ़ायें सारी वस्तुएं परमात्मा द्वारा ही प्रदान की गयी हैं।

षोडषोपचार पूजन आदि में ऐसा विधान हैं। विष्णु जी को अक्षत(चावल) नहीं चढ़ाये जाते । तुलसी पत्र ही चढ़ाया जाता हैं क्योंकि तुलसी विष्णु जी की पत्नी हैं अतः उनका सानिध्य प्राप्त करने हेतु तुलसी पत्र चढ़ाया जाता हैं। शिवजी पर कमल पुष्प नहीं अपितु बिल्व पत्र(बेल पत्र) चढ़ता हैं। आयु वृद्धि, आरोग्यता के लिए – 'ऊँ त्र्यंबकं यजामहे' आदि मंत्र से त्रिनेत्रधारी भगवान् शिवजी की उपासना की जाती हैं और तीन पत्तों वाला बिल्वपत्र चढ़ाया जाता है। इसी तरह दुर्गा जी को कनेर का पुष्प, सूर्यदेव को जवाकुसुम और गणेश पर दुर्बा (दूब) चढ़ानी चाहिए। कमल पुष्प भगवान् शिवजी द्वारा शापित है इसलिए कमल पुष्प और परागों के मिश्रण से बना 'कुंकुम' शिवलिंग पर नहीं चढ़ाये जाते।

वर्ण-व्यवस्था में शूद्रों को कहीं श्रेष्ठ पद प्राप्त हुआ या नहीं?

सर्वप्रथम तो यह बता देना उचित होगा कि वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत शूद्रो को उच्चपद का कहीं निषेध नहीं है। पूर्वाकाल में शूद्रों में वाल्मीकि जी थे जो श्री राम जी के परम भक्त थे। श्री वाल्मीकि जी ने संस्कृत में रामायण की रचना की जो आज भी 'वाल्मीकी रामायण' के नाम से देश भर में प्रसिद्ध हैं। इन्हें 'ब्रह्मर्षि की उपाधि प्राप्त हैं। पुरुषोत्तम भगवान श्री राम ने नीच जाति कही जाने वाली शबरी भीलनी के जूठे बेर खाये। निषादराम को श्री राम जी ने गले लगाया। धन्ना जाट के हाथ से भगवान विष्णु ने बाजरे की रोटी छीनकर खायी। गणिका वेश्या का भगवान ने उद्धार किया। जब सृष्टि को रचने वाले भगवान जाति–पाति का भेदभाव नहीं रखते तो हम आप क्यों करें यह भेद–भाव।

वास्तव में अहिन्दुओं(जो हिन्दु नहीं हैं) ने वर्ण–व्यवस्था के अन्तर्गत प्रचार किया जो कि तथ्यहीन है। तुलसीदास जी ने लिखा हैं।

"कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।।"

वर्ण व्यवस्था मनुष्यों पर ही लागू होती है या पशु-पक्षियों पर भी।

वर्ण व्यवस्था मनुष्यों पर ही नहीं बल्कि देवताओं, पशु–पक्षियों और पेड़–पौधों पर भी लागू होती हैं। तैत्तिरीय ब्राह्मण के एक मंत्र के अनुसार देवताओं में सनकादि ऋषि ब्राह्मण वर्ण के हैं। इन्द्र, वरूण, सोम, रुद्रादि देवता क्षत्रिय वर्ण के, गणेश और वसु आदि देवता वैश्य वर्ण के तथा पूषा आदि शूद्र कोटि के देवता हैं। पशुओं में सत्वगुण के कारण 'अज' ब्राह्मण कोटि में, सिंह बाघ, चीता आदि क्षत्रिय वर्ण में, गाय, भैंस, घोड़ा, ऊँट आदि वैश्य वर्ण में तथा सूअर, गधा, सियार आदि शूद्र की कोटि में आते हैं।

पक्षियों में तोता, मैना, हँस, सारस और कबूतर आदि पक्षी ब्राह्मण वर्ण में, बाज, नीलकण्ठ आदि पक्षी क्षत्रिय, तीतर, बटेर, मोर ये वैश्य वर्ण में तथा गिद्ध, चील, कौआ, बगुला आदि शूद्रों की श्रेणी में आते हैं। वृक्षों में पलाश, अपामार्ग, शमी, पीपल, देवदारू, तुलसी आदि ब्राह्मण कोटि में आते हैं। रक्त चन्दन, शीशम, सागवान आदि क्षत्रिय की श्रेणी में तथा बांस, बबूल, नागफनी आदि शूद्र कोटि में आते हैं।

सनातन धर्म में स्त्रियाँ माँग में सिन्दूर क्यों लगाती हैं?

सीमन्त अर्थार् माँग में सिन्दूर लगाना सुहागिन स्त्रियों का सूचक हैं। हिन्दुओं में विवाहित स्त्रियाँ ही सिन्दूर लगाती हैं। कुंवारी कन्याओं एवम् विधवा स्त्रियों के लिए सिन्दूर लगाना वर्जित है। इसके अलावा सिन्दूर लगाने से स्त्रियों के सौंदर्य में भी निखार आता है अर्थात् उनकी सुन्दरता बढ़ जाती है। विवाह–संस्कार के समय वर (दूल्हा), वधू(दुल्हन) के मस्तक में मंत्रोच्चार के मध्य पाँच अथवा

सात बार चुटकी से सिन्दूर डालता है। तत्पश्चात् विवाह कार्य सम्पन्न हो जाता है। उस दिन से वह स्त्री अपने पति की दीर्घायु (लम्बी आयु) के लिए प्रतिदिन सिन्दूर लगाती है। माँग में दमकता सिन्दूर स्त्रियों के सुहाग की घोतक हैं।

वैज्ञानिक कारण – ब्रह्मारन्ध्र और अध्मि नामक मर्मस्थान के ठीक ऊपर स्त्रियाँ सिन्दूर लगाती हैं जिसे समान्य भाषा में सीमन्त अथवा माँग कहते हैं। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का यह भाग अपेक्षाकृत कोमल होता है। चूँकि सिन्दूर में पारा जैसी धातु अत्याधिक मात्रा में पायी जाती है जो स्त्रियों के शरीर की विद्युतीय ऊर्जा को नियंत्रित करता है और मर्मस्थल को बाहरी दुष्प्रभावों से बचाता भी है, अतः वैज्ञानिक दृष्टि से भी स्त्रियों को सिन्दूर लगाना आवश्यक है।

तिलक क्यों लगाते है?

शास्त्रों के अनुसार यदि ब्राह्मण तिलक नहीं लगाता तो उसे 'चण्डाल' समझना चाहिए। तिलक धारण करना धार्मिक कार्य माना गया है।

क्या तिलक केवल ब्राह्मण लगा सकते हैं अन्य जातियाँ नहीं?

तिलक, त्रिपुण्ड, टीका अथवा बिन्दिया आदि का सीधा संबंध मस्तिष्क से होता हैं। मनुष्य की दोनों भौंहों के बीच 'आज्ञा चक्र' स्थित है। इस चक्र पर ध्यान केन्द्रित करने पर भी साधक का मन पूर्ण शक्ति सम्पन्न हो जाता है। इसे 'चेतना केन्द्र' भी कहा जाये तो अनुचित न होगा अर्थात् समस्त ज्ञान एवम् चेतना का संचालन इसी स्थान से होता है। 'आज्ञा चक्र' ही 'तृतीय नेत्र' है इसे 'दिव्यनेत्र' भी कहते हैं। तिलक लगाने से 'आज्ञा चक्र' जागृत होता हैं जिसकी तुलना राडार, टेलिस्कोप आदि से की जा सकती है। इसके अलावा तिलक सम्मान–सूचक भी है। तिलक लगाने से साधता (सज्जनता) एवम् धार्मिकता का आभास होता है।

वैज्ञानिक कारण – जब हम मस्तिष्क से आवश्यकता से अधिक काम लेते हैं तब ज्ञान–तन्तुओं के विचारक केन्द्र भृकुटि और ललाट के मध्य भाग में पीड़ा उत्पन्न हो जाती है। ठीक उस स्थान पर जहाँ तिलक, त्रिपुण्ड लगाते हैं। चन्दन का तिलक ज्ञान–तन्तुओं को शीतलता प्रदान करता है। जो प्रतिदिन प्रातः काल स्नान के पश्चात् चन्दन का तिलक लगाता है उसे सिर दर्द की शिकायत नहीं होती । इस तथ्य को डाक्टर्स एवम् वैद्य, हकीम भी स्वीकार करते हैं।

कुंकम क्या हैं? इसका तिलक क्यों लगाते हैं?

कुंकम हल्दी का चूर्ण होता हैं जिसमें नींबू का रस मिलाने से लाल रंग का हो जाता हैं। आयुर्वेद के अनुसार कुंकम त्वचा शोधन के लिए सर्वोत्तम औषधि हैं। इसका तिलक लगाने से मस्तिष्क तन्तुओं में क्षीणता नहीं आती।

भस्क का तिलक क्यों लगाते हैं?

भस्म को एक तरह से देवताओ का प्रसाद जानें। भोग के लिए देवताओं को चढ़ाया गया मिष्ठान्न आदि तो प्रसाद होता है किन्तु यज्ञ भस्म ऐसा प्रसाद है जो खाया नहीं जाता बल्कि यह भस्म रूपी राख सिर में एवम् शरीर में पूरी श्रद्धा भक्ति से लगायी जाती है।

श्री पवन पुत्र हनुमान जी को सिन्दूर क्यों चढ़ाया जाता हैं।

रामायण की एक कथा के अनुसार एक बार जगत माता जानकी (सीता जी) अपने माँग में सिन्दूर लगा रही थी। उसी समय हनुमान जी आ गये और सीता जी को सिन्दूर लगाते देखकर बोले – “माताजी! यह लाल द्रव्य जो आप मस्तक में लगा रही हैं यह क्या हैं? इसके लगाने से क्या होता है?”

श्री हनुमान जी का प्रश्न सुनकर सीता जी क्षण भर चुप रहीं तत्पश्चात् बोलीं – “यह सिन्दूर है। इसके लगाने से प्रभो(श्री राम जी) दीर्घायु होते हैं और मुझसे

सदैव प्रसन्न रहते हैं।" चुटकी भर सिन्दूर लगाने से प्रभो श्री राम चन्द्र जी की दीर्घायु और प्रसन्नता की बात माता जानकी के मुख से सुनकर श्री हनुमान जी ने विचार किया कि जब थोड़े-सा सिंदूर लगाने से प्रभो को लम्बी उम्र प्राप्त होती है तो क्यों न मैं अपने सम्पूर्ण शरीर में सिन्दूर पोतकर प्रभो को अजर-अमर कर दूँ और उन्होंने वैसा ही किया। सम्पूर्ण तन में सिंदूर पोतकर वे दरबार में पहुँचे और श्री राम जी से कहने लगे – "भगवन्! प्रसन्न होइये" हनुमान जी का सिन्दूर पुता शरीर देखकर श्री राम जी हँसने लगे और हँसते – हँसते बोले – "वत्स! ये कैसी दशा बनाकर आये हो" तब हनुमान जी ने सारा वृतान्त बताया । सारी बात सुनकर श्री राम जी अति प्रसन्न हुए और बोले – "वत्स! तुम जैसा मेरा भक्त अन्य कोई नहीं है"। तत्पश्चात् उन्होंने हनुमान जी को अमरत्व प्रदान किया। तभी से हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ाया जाता हैं।

क्या मंत्र भी 'वैध' एवम् 'अवैध' होते हैं?

जिस प्रकार की पति-पत्नी के समागम से उत्पन्न बालक को "वैध" तथा व्यभिचार द्वारा उत्पन्न बालक को समाज "अवैध" मानता है। जबकि उस बालक की उत्पत्ति स्त्री के ही गर्भ से होता है ठीक उसी प्रकार गुरु द्वारा प्रदान किया गया मंत्र "वैध" होता है तथा रटा-रटाया मंत्र अवैधता की श्रेणी में आता है। कुछ लोगों का कथन है कि गुरु द्वारा प्रदत्त (दिया गया) मंत्र एवम् पुस्तकों में लिखा मंत्र एक ही होता है। शब्द एवम् वर्णमाला एक ही होता है फिर यह भेद क्यों?

यदि यह कहा जाये कि अग्नि तो एक ही है चाहे वह चिता शमशान की हो या हवन कुण्ड की, चूल्हे की हो अन्यत्र की। प्रकाश गुण जलाने की क्षमता एक समान होती है किन्तु यदि आसे कहा जाये कि श्मशान की जलती चिता पर खाना बनाकर खा सकते हो तो आपका सीधा जवाब 'नही' में होगा। आप

यह भी कह सकते हैं कि चिता की आग पर बनी रोटी भला खाने योग्य होगी। मंत्रों में भी ऐसा ही विचार होता है।

पीपल वृक्ष की पवित्रता का धार्मिक कारण क्या है?

पीपल वृक्ष समस्त वृक्षों में सबसे पवित्र इसलिए माना गया हैं क्योंकि हिन्दुओं की धार्मिक आस्था के अनुसार स्वयं भगवान श्री हरि विष्णु जी पीपल वृक्ष में निवास करते है। श्री मद् भगवद्गीता में स्वयं भगवान श्री कृष्ण चन्द्रजी अपने श्री मुख से उच्चारित किये हैं कि वृक्षों में मैं 'पीपल' हूँ। स्कन्ध पुराण के अनुसार पीपल के मूल (जड़) में विष्णु, तने में केशव, शाखाओं में नारायण, पत्रों में भगवान हरि, और फलों में समस्त देवताओं से युक्त अच्युत भगवान सदैव निवास करते हैं।

क्या वैज्ञानिक दृष्टि से भी पीपल वृक्ष पूज्यनीय है?

ऑक्सीजन का उत्सर्जन है जो जीवधारियों के लिए 'प्राण–वायु' कही जाती है। प्रत्येक जीवधारी ऑक्सीजन लेता है और कार्बन डाई ऑक्साइड छोड़ता है। वैज्ञानिक खोजों से यह तथ्य सिद्ध हो चुका है। ऑक्सीजन देने के अलावा पीपल वृक्ष में अन्य अनेक विशेषताएँ हैं जैसे इसकी छाया सर्दी में ऊष्णता (गर्मी) देती है और गर्मी में शीतलता देती है। इसके अलावा पीपल के पत्तों से स्पर्श करने से वायु में मिले संक्रामक वायरस नष्ट हो जाते है। आयुर्वेद के अनुसार इसकी छाल , पत्तों और फल आदि से अनेक प्रकार की रोगनाशक दवायें बनती हैं।

वर्ण व्यवस्था जन्म जात होती है अथवा संस्कार के अनुसार ?

सामान्य तौर पर वर्ण–व्यवस्था जन्म–जात होती है किन्तु कुछ विद्वानों का कथन है कि व्यक्ति जन्म से शूद्र होता है (क्योंकि कमर के नीचे का भाग शूद्र की श्रेणी में आता है और प्रत्येक मनुष्य का जन्म कटि से नीचे ही होता हैं।)

संस्कारों के फलस्वरूप उसमें ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व अथवा अन्य कोटि का भाव आता है किन्तु जन्मगत विशेषताओं को भी नकारा नहीं जा सकता क्योंकि बहुत पुरानी कहावत है कि 'खून, अपने खून' (पुत्र, भाई आदि से तात्पर्य) कोअपनी ओर खीचता है। वैज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकारते हैं कि वीर्य (बीज) में निहित वंशागत गुण धर्म पुत्र में पाये जाते हैं। बाहरी संस्कारों से थोड़ा बहुत परिवर्तन लाया सकता है किन्तु बालक में उसके माता–पिता के गुण विशेष रुप से विद्यमान रहेंगे।

चेचक एक भंयकर रोग है, फिर इसे शीतला माता क्यों कहते हैं?

चेचक के उपचार हेतु वैज्ञानकि एवम् डॉक्टरों ने बहुत बल दिया। इनके कथनानुसार चेचक विषाणुजनित (वायरस) रोग है। इसका इलाज औषधियों से हो सकता है किन्तु वे पूर्णतः सफल नहीं हुए क्योंकि जिस प्रकार कपड़ों में लगी मैल को साबुन धो डालता हैं किन्तु 'काई' को नहीं छुड़ा पाता किन्तु यदि कोई मूर्ख तेजाब से कपड़े की काई को निकालने का प्रयास करता है तो परिणाम स्वरूप कपड़ा ही नष्ट हो जाता है। उसी प्रकार कोई डॉक्टर दवाओं द्वारा चेचक के रोगी का इलाज करता है तो वह रोगी के जीवन के साथ मजाक करता है। चेचक को रोग शरीर के अन्दरूनी भाग से पूरे शरीर पर एक साथ प्रकट होता है। ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी एवम् चामुण्डा – ये सात माताएँ हैं। इनसे चामुण्डा का स्वरूप सबसे घातक होता हैं। सात स्टेज वाले इस रोग में प्रथम स्टेज की देवी ब्राह्मी है। चौथे स्टेज तक कोई खतरा नहीं रहता अर्थात् वैष्णवी तक जातक के प्राण जाने का भय नहीं होता किन्तु उसके बाद जीवन खतरे में पड़ जाता है। कौमारी में एक बार विस्फोट होता है, जो नाभि तक दिखायी देता है। वाराही का आक्रमण मंद हैं जो नाभि तक दिखायी देत ह। वाराही का आक्रमण मंद गति से होता है अतः 'मन्थज्वर' भी कहते हैं तथा चामुण्डा के आक्रमण से रोगी की दुर्गति हो जाती है। जीभ, आँख, नाक, मुँह आदि पर पूरा प्रकोप होता है। रोगी अन्धा, लूला,

लंगड़ा भी हो जाता है। चामुण्डा से आक्रान्त रोगी शव के समान हो जाता है। गधे पर सवार, हाथ में झाड़ू लिए हुए, नग्न रूप धारी शीतला माता को मैं नमस्कार करता हूँ।

प्रार्थना करने से क्या लाभ हैं?

ह्दय से निकली हुई भावना को ही प्रर्थाना रुप से ईश्वर के सामने प्रकट करते हैं। प्रर्थना में ईश्वर की प्रशंसा करते हैं। विश्व में अनेक धर्मों को मानने वाले लोग हैं तथा उनकी अपनी अलग–अलग भाषायें हैं किन्तु सभी लोग प्रर्थनाओं के माध्यम से परमात्मा की कृपा प्राप्त करते हैं। भगवान ने अपने भक्तों की प्रार्थना स्वीकार करके उन्हें मनवांछित वरदान भी दिए हैं। कई बार तो ऐसा चमत्कार भी हुआ है जिसे डॉक्टर ने ला–इलाज (जिसका ईलाज संभव न हो) घोषित कर दिया किन्तु किसी दैवी शक्ति के प्रभाव से वह व्यक्ति बच गया है। ऐसे अनेक दृष्टान्त मिलते हैं। यह सत्य है कि सच्चे मन से की गयी प्रार्थनाओं से मानव का कल्याण निश्चित रूप से हो जाता हैं।

मृत्यु के पश्चात् श्राद्ध आदि क्रियाओं को पुत्र ही क्यों करें?

पिता के वीर्य अंश उत्पन्न पुत्र पिता के समान ही व्यवहार वाला होता है। हिन्दू धर्म में पुत्र का अर्थ हैं – ‘पु’ नाम नर्क से ‘त्र’ त्राण करना अर्थात् पिता को नरक से निकालकर उत्तम स्थान प्रदान करना ही ‘पुत्र’ का कर्म है। यही कारण है कि पिता की समस्त और्ध्व दैहिक क्रियायें पुत्र ही करता है। एक ही मार्ग से दो वस्तुएं उत्पन्न होती हैं। एक ‘पुत्र’ तथा दूसरा ‘मूत्र’ यदि पिता के मरणोपरान्त उसका पुत्र सारे अन्तेष्टि संस्कार नहीं करता तो वह भी ‘मूत्र’ के समान होता है।

सूर्य के रथ को सात घोड़े खींचते हैं। ऐसा लोगों का विचार है। इन सात घोड़ो का वैज्ञानिक रहस्य क्या हैं?

न तो सूर्य के पास कोई रथ है और न ही उस रथ को सात घोड़े खींचते है। सौर मण्डल में अपनी धुरी पर परिक्रमा करना ही सूर्य की गति है। सूर्य हमसे बहुत दूर है। उसकी किरणें ही हम तक पहुँचती हैं। सूर्य की ये सप्तवर्ण किरणों को ही हिन्दू धर्म ने अलंकारिक भाषा में सूर्य के सात घोड़ों की उपाधि दी हैं।

पुनर्जन्म वैज्ञानिक है या केवल अवधारणा हैं।

विज्ञान के अनुसार कोई भी पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता बल्कि वह किसी अन्य रूप में परिवर्तित हो जाता है। जैसे हरे–भरे वृक्ष सैंकड़ो वर्ष बाद सूख जाते हैं। तब उन्हें हम वृक्ष न कहकर 'लकड़ी' कहते हैं और वही लकड़ी जमीन के नीचे दबी रहती है तो सौ पचास वर्ष बाद कोयले के रूप में हो जाती है, कोयला जलकर राख और धुएँ में बदल जाता हैं। राख उड़कर इधर–उधर चली जाती है किन्तु नष्ट नहीं होती । विज्ञान का यह तथ्य आत्मा के अमर होने का और पुनर्जन्म की पुष्टि करता हैं।

कर्मफल क्या है? क्या कर्मफल अवश्य भोगने पड़ते हैं?

जो शुभ–अशुभ, पुण्य अथवा पाप जीव करता है, उसके उन कर्मों के अनुसार उसे 'फल' की प्राप्ति होती है। कितने लोग कहते हैं कि अमुक व्यक्ति ने कभी पाप नहीं किया फिर भी बेचारा दरिद्री और अभावों में जी रहा है। शायद उसके भाग्य में दुख ही लिखे हैं और अमुक दूसरों को सताता है, मारता पीटता है, दूसरों का धन हड़प लेता है, तब भी वह सुखी है। झूठ–ठगी, बेईमानी पिछले जन्मों का कर्मफल हैं। पूर्व जन्म में जिसने जैसा भी कर्म किया होगा उसका फल उसे इस जन्म में मिल रहा है और इस जन्म के कर्मों का फल अगले जन्म में भोगना होगा।

मूर्ति पूजा क्यों करें? मूर्ति पूजा से क्या लाभ हैं?

उपासना की पंचम श्रेणी मूर्ति पूजा है। मनुष्य का चंचल मन इधर–उधर भटकता है। चाहकर भी लोग अपने मन की चंचलता को नहीं रोक पाते। मन की चंचलता को रोकने का एकमात्र साधन है–मूर्तिपूजा। चंचल मन यदि बिना मूर्ति के स्थिर नहीं हो पा रहा है, तब मूर्तिपूजा के अतिरिक्त अन्य कोई साधन नहीं है। मूर्ति पर दृष्टि रखने से उस मूर्ति के प्रति भावना जागृत होती है और वह भावना ही मन की चंचलता को केन्द्रित करती है। मूर्ति पूजा का प्रचलन सनातन हिन्दू धर्म में ही नहीं बल्कि अन्य धर्म के लोगों में भी है। सिक्ख लोग 'गुरु ग्रन्थ साहब' की पूजा करते हैं, ईसाई लोग पवित्र 'क्रास' की, मुसलमान लोग 'कुरान शरीफ' को चूमते हैं। महाभारत काल के प्रमाण एकलव्य ने द्रोणाचार्य को गुरु माना जबकि द्रोणाचार्य ने एकलव्य को शिष्य रूप में स्वीकारने से मना कर दिया फिर भी एकलव्य ने उन्हें गुरु मानकर उनकी मिट्टी की प्रतिमा बनाकर बाण–विद्या सीखी। अर्थात् भावना को उभारने के लिए मूर्ति आवश्यक हैं।

श्राद्ध अश्विन मास में ही क्यों?

अश्विन मास में पितृ–पक्ष हमारे सामाजिक उत्सवों में पितरों का सामूहिक महापर्व है। इस समय सभी पितर अपने पृथ्वी लोक वासी सगे–सम्बन्धियों के घर बिना बुलाये आते हैं और 'काव्य' ग्रहण करके परितृप्त होते हैं तथा अपना आशीर्वाद उन्हें प्रदान करते हैं।

श्राद्ध किसे कहते है?

मृत पितरों के उद्देश्य से जो अपने प्रिय भोज्य पदार्थ ब्राह्मण को श्राद्धपूर्वक प्रदान किये जाते हैं, इस अनुष्ठान को 'श्राद्ध' कहते हैं।

श्राद्ध में किया गया भोजन मृत प्राणी को कैसे प्राप्त होता हैं?

लोगों का ऐसा विश्वास है कि श्राद्ध में जो भोजन खिलाया जाता हैं, वह पदार्थ ज्यों का त्यों, उसी तौल अनुपात में मृत पितर को प्राप्त होता है। वास्तव में ऐसा नहीं है। श्राद्ध में दिये गये भोजन का सूक्ष्म अंश परिणत होकर उसी अनुपात में प्राणी को प्राप्त होती हैं।

क्या श्राद्ध करते समय मृत पितर दिखायी देते हैं?

रामायण कथा के अनुसार जब पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी अपने पिता का श्राद्ध कर रहे थे तब सीता जी ने श्राद्ध की समस्त सामग्री अपने हाथ से तैयार की परंतु जब निमंत्रित ब्राह्मण भोजन करने लगे तब सीता जी दौड़कर कुटी में जा छिपीं। बाद में श्री राम जी ने सीता की घबराहट और छिपने का कारण पूछा–तब वे कहने लगीं–स्वामी।

मैंने ब्राह्मणों के शरीर में आपके पिताश्री के दर्शन किये। अब आप ही बताइये जिन्होंने पहले मुझे समस्त आभूषणों से विभूषित अवस्था में देख था, वे मेरे पूज्य श्वसुर जी मुझे इस तरह पसीने और मैल से सनी हुई कैसे देख पाते? ऐसा ही प्रसंग महाभारत में भी मिलता हैं, जब भीष्म जी अपने पिता शान्तुन जी का पिण्डदान करने लगे। उसके समाने साक्षात् शान्तनु जी के दहिने हाथ ने उपस्थित होकर पिण्ड ग्रहण किया।

अन्त्येष्टि संस्कार किसे कहते हैं? या अन्त्येष्टि संस्कार क्यों करते हैं?

किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाये। मृत्योपरान्त जो मृतक के आत्मा की शान्ति के लिए क्रिया कर्म किये जाते हैं, उन्हें अन्त्येष्टि संस्कार कहते हैं। मृतक के मोक्ष एवम् परलोक सुधार हेतु ये संस्कार किये जाते हैं।

देवताओं में सर्वश्रेष्ठ और अग्र गणेश जी माने गये हैं क्यों?

अनेक लोगों का यही प्रश्न होता हैं कि अनेक सुन्दर और शक्तिशाली देवता हैं। सूर्य हमें रोशनी देते हैं, इन्द्र देव पानी बरसाकर अन्न उपजाने में सहायता करते हैं। जीव–धारियों के प्राण रक्षक पवन देव हैं फिर गणेश जी की प्रथम पूजा क्यों होती हैं?

एक पैराणिक कथा के अनुसार प्राचीन काल में एक बार देवताओं की सभा हुई और उनके मध्य यह प्रंसग उठा कि सबमें श्रेष्ठ कौन हैं? सभी देवता अपने–अपने को श्रेष्ठ समझ रहे थे। इस तरह निर्णय न हो सका। अन्ततः निश्चित हुआ कि जो तीनों लोकों की सबसे पहले परिक्रमा करके इस स्थान पर पहुँचेगा वही सर्वश्रेष्ठ एवम् प्रथम पूज्य होगा। यह सुनकर सभी देवता अपने तीव्रगामी वाहनों पर सवार होकर तीनों लोको की परिक्रमा करने चल पड़े किन्तु भारी–भरकम शरीर वाले गणेश जी अपने वाहन मूषक के साथ वहीं रह गये किन्तु उन्होंने अपने साहस नहीं खोये। वे वहाँ से चलकर उस स्थान पर गये जहाँ उनके माता–पिता (शिव पार्वती) बैठे हुए थे। उन्होंने माता–पिता की तीन बार परिक्रमा की और जाकर सभापति के आसन पर विराजमान गणेश को लड्डू खाते हुए देखकर क्रोधित होकर मुग्दर का प्रहार उनके दांतों पर किया। गणेश जी का एक दाँत टूट गया। तभी से वह एकदंत हो गये। तत्पश्चात् गणेश जी ने सभी देवताओं की समक्ष तर्क प्रस्तुत किया कि तीनों लोकों की सुख–सम्पदा माता–पिता के चरणों में विराजती हैं। माता–पिता की चरण सेवा ही सर्वोपरि है। जो इनके चरणों को छोड़कर लोकों का भ्रमण करता हैं उसका सारा परिश्रम व्यर्थ चला जाता हैं। वस्तुतः गणेश जी में जो विशेषतायें हैं, यदि मानव उन्हें ग्रहण कर ले तो वह भी अपने समाज में प्रथम–पूज्य बन जायेगा। भगवान गणेस जी का विशाल मस्तक हमें लाभदायी विचार ग्रहण करने की प्रेरणा देता है। उनके बड़े–बड़े कान उत्तम विचारों को सुनने की प्रेरणा देते हैं नीचे की ओर लटकी नाक खतरों को सूँघने की प्रेरणा देती हैं।

एक दाँत से वचनबद्धता तथा छोटी आँखे ध्यानमग्नता की ओर संकेत करती हैं। मोटा पेट पाचन शक्ति और धैर्यता का प्रतीक हैं। विघ्नों के विनाश हेतु वह हाथ में पशु तथा मानव कल्याण के लिए वरद मुद्रा धारण किये हैं। ये गुण अन्य देवतों में नहीं हैं।

मंत्रोच्चार करके ग्रहों का आह्वान करके ब्राह्मण या तांत्रिक लोग ग्रहों को बुलाने का उपक्रम करते हैं। क्या वास्तव में आह्वान करने पर ग्रह आते हैं? आते हैं तो कैसें?

जिस प्रकार फोटोग्राफी कैमरे के छोटे से लैन्स में बड़े–बड़े भवन किले आदि समा जाते हैं उसी प्रकार हमारी आंखे में जो प्राकृतिक लैन्स लगा है इसमें पूरे ग्रह मण्डल, सूर्य, चन्द्रमा आदि समा जाते हैं। ऐसे ही सूक्ष्म रूप में सार ग्रह हवन कुण्ड में आ सकते हैं।

शिखा(चोटी) क्यों रखते हैं? तथा शिखा में ग्रन्थि(गाँठ) लगाने का क्या उद्देश्य हैं?

सन्धया चन्दन, गायत्री जप, यज्ञ अनुष्ठान आदि में शिक्षा का होना परम आवश्यक है। द्विज(ब्राहम्णों) के लिखे शास्त्र भी शिखा रखने के लिए कहते हैं। धर्म शास्त्रों के अनुसार शिखा में ग्रन्थि लगाकर ही संध्यावन्दन या यज्ञ–हवन आदि करना चाहिए।

वैज्ञानिक कारण- शिखा वाले स्थान पर 'ब्रह्म रन्ध्र' होता है जिसे 'दशम द्वार' भी कहते हैं जरा सी चोट उस स्थान पर लगने से मनुष्य की मृत्यु भी हो सकती हैं। दशमद्वार की रक्षा हेतु शिखा रखने का विधान हैं।

लोग भविष्य के लिए ज्यादा चिन्तित रहते हैं। क्या भविष्य को भाग्य के सहारे छोड़ देना चाहिए?

सृष्टि की रचना जब से हुई, तब से लेकर आज तक मनुष्य अपने भविष्य को जानने के प्रति काफी जिज्ञासु रहा है और जिज्ञासा भविष्य में आने वाली सन्तानों में भी रहेगी। इसी भविष्य की जानकारी के लिए अनेक विद्यायें भी प्रकाश में आयी जैसे हस्तरेखा, अंक ज्योतिष, जन्म कुण्डली से भविष्य फल आदि। फिर भी 'भविष्य' एक अनसुलझी पहेली की भांति हैं। कुछ लोग कहते हैं कि भविष्य कर्म के अनुसार बनता बिगड़ता है। इस संदर्भ में कृष्ण जी ने गीता उपदेश में कर्म को प्रधान बताया है तो तुलसीदास जी ने रामायण में यही लिखा हैं – "कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।।"

लेकिन वहीं भगवान कृष्ण ने जब कुन्ती से कर्म प्रधानता की व्याख्या की तब कुन्ती ने कहा–हे केशव! यह मानती हूँ कि संसार में कर्म प्रधान हैं। कठोर परिश्रम एवम् पुरुषार्थ से सब कुछ पाया जा सकता है किन्तु कई बार भाग्य के सामने पुरुषार्थ एवम् विद्या दोनों निष्फल हो जाते हैं। अब प्रत्यक्ष ही देख लो, विद्वानों में महा विद्वान मेरा पुत्र युधिष्ठिर है जिसे लोग धर्मराज कहते हैं, महावीर भीम, धनुर्धारी अर्जुन और नकुल–सहदेव जैसे पुत्रों के होते हुए भी दुर्बुद्धि एवम् कायर दुर्योधन हस्तिनापुर पर शासन कर रहा हैं। यह उसके भाग्य की प्रबलता ही हैं।

भारतीय मान्यता के अनुसार हाथ मिलाना उचित हैं या नहीं?

भारतीय मान्यता के अनुसार हाथ मिलाने से अपने शरीर की संचित शक्ति दूसरे में प्रवेश कर जाती हैं। इस तरह शरीर में क्षीणता आती हैं। प्राचीन काल से ही गुरुजन अपने शिष्यों के सिर पर हाथ रखकर 'शक्तिपात' करते हैं अर्थात् बिना बताये उसे शक्ति प्रदान करते हैं।

वैज्ञानिक कारण- पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण करने से यहाँ हाथ मिलाने का प्रचलन हुआ। यह उचित नहीं है क्योंकि हाथों में अनेक प्रकार की संक्रामक

बीमारियों को वायरस चिपके रहते हैं जिनका हाथ मिलाने से आदान–प्रदान हो जाता हैं। इस तरह विज्ञान के अनुसार हाथ मिलाना उचित नहीं हैं।

नमस्ते कहना उचित हैं या नहीं?

नमस्ते शब्द की रचना संस्कृत भाषा के 'नमः' और 'ते' शब्दों के मिलान से हुई। नमः का अर्थ होता हैं 'झुकना' और 'ते' का अर्थ है 'तुम्हारे लिए'।

कुछ लोग गुड़मार्निंग, गुडनून, गुड ईवनिंग आदि कहकर अभिवादन करते हैं। यह भी उचित नहीं है। क्यो?

अभिवादन हेतु गुड़मार्निंग आदि अंग्रेजी के शब्दों का प्रचलन ईसाईयों ने किया यूरोप और अमेरिका में साल में 9 महीने बर्फ पड़ती है, बाकि 3 महीने सर्दी रहती है, इसलिए वहाँ सूर्य बहुत कम दिन दिखाई देता है, जब भी सूर्य निकलता है तो वहाँ के लोग एक दूसरे को गुड़ मार्निंग विश करते हैं, इसी तरह बर्फ ना पड़े रात में, तो एक दूसरे को गुड़ नाईट बोलकर सोते हैं। किन्तु आश्चर्य की बात की अभिवादन के इन शब्दों में कहीं भी ईश्वर का नाम नहीं हैं, और न ही कृतज्ञता जो ईश्वर के प्रति होती हैं जबकि जैराम, राधेकृष्ण, सीताराम आदि शब्दों के उच्चारण मात्र से ही जीभ पवित्र हो जाती हैं। यदि किसी के घर चोरी हो गयी है या कोई अप्रिय घटना घटित हो गयी हैं और सुबह सुबह आप उसके घर पहुँचकर 'गुड़मार्निंग' कहें तो जल भुनकर राख हो जायेगा जबकि उसकी तो मार्निंग खराब हो चुकी हैं। जहाँ आप गुड़ मार्निग बोलते हैं वहाँ 'राम–राम' कहेंगे तो सामने वाला प्रेमपूर्वक आपका अभिवादन स्वीकार करेगा।

अभिवादन कैसे करे?

अपने गुरुजनों एवम् बड़ी उम्र वालों के चरण स्पर्श करें, अपने से छोटी उम्र वालों को आशीर्वाद प्रदान करें तथा अपने बराबर उम्र वालों को हाथ जोड़कर देवताओं के नाम का जयकारा करें।

ईश्वर का अभिवादन किस प्रकार करना चाहिए?

ईश्वर का अभिवादन वेद पाठ, स्त्रोत पाठी, श्रद्धा, भक्ति एवम् साष्टांग प्रणाम(क्षैतिज पेट के बल लेटकर) करना चाहिए।

साष्टांग प्रणाम करने का कारण स्पष्ट करें?

साष्टांग प्रणाम करने से उस देवी–देवता को, जिसे आप प्रणाम कर रहे हैं, उनके समाने दृष्टि, मस्तक, तन–मन झुक जाता है तथा अहं भावना नष्ट होकर प्रभु के चरणों को समर्पित हो जाती हैं।

जब किसी मंत्र को पाठ आरम्भ करते हैं उससे पहले 'हरि ओउम' शब्द का उच्चारण क्यों करते हैं?

प्रथम तो 'हरि ओउम'का उच्चारण करना वैदिक परम्परा है। वेद पाठ के समय यदि अशुद्ध उच्चारण हो जाता है तो 'महापातक' नामक दोष लगता हैं। उस दोष के निवारण हेतु ही 'हरि ओउम' का उच्चारण करते हैं।

विवाह कितने प्रकार के होते हैं?

विवाह आठ प्रकार के होते हैं – ब्रह्म, देव, आर्ण, प्रजापत्य, असुर, गन्धर्व , राक्षस और पैशाच। इसमें प्रथम चार प्रकार के विवाह श्रेष्ठ कहे गये हैं, अन्तिम चार निकृष्ट कहे गये हैं।

गोबर से जमीन लीपने का क्या अभिप्राय हैं?

गोबर से एक प्रकार की विशेष शक्ति निहित होती है जिसके सम्पर्क में आने पर टी.बी. के वायरस तत्काल मर जाते हैं। वैसे तो धार्मिक दृष्टि से उस स्थान को पवित्र बनाने के लिए उस स्थान की पुताई करते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से भी इसका महत्व बहुत अधिक हैं। इटली के डॉक्टरों ने गोबर की उपयोगिता पर शोध करके इस टी.बी. सेनिटोरियम में रखने की सलाह दी हैं।

पत्नी पति के वाम भाग (बायी ओर) कब-कब बैठती हैं?

सिन्दूर दान, द्विरागमन, भोजन, शयन और सेवा के समय, अभिषेक तथा ब्राह्मणों के पाँव धोते समय पत्नी को पति के बायीं ओर रहना चाहिए। कन्यादान, विवाह, यज्ञकर्म एवम् जातकर्म, नामकरण तथा अन्नप्राशन के शुभ अवसरों पर पत्नी को पति के दाहिनी ओर बैठना चाहिए।

यह बाएँ और दायें का चक्कर क्यों?

जो कर्म स्त्री प्रधान होते हैं अथवा जो कर्म इह लौकिक होते हैं, उसमें पत्नी पुरुष की बायीं ओर बैठती हैं – जैसे माँग में सिन्दूर भरना, सेवा, शयन आदि। परंतु यज्ञादि, कन्यादान, विवाह ये सभी कार्य पुरुष प्रधान हैं। इसमें पत्नी दायीं ओर बैठती हैं।

मानव, मनुष्य, पुरुष, आदमी और इन्सान! इन सभी का मतलब एक ही होता हैं फिर भी अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग रूप में प्रयोग किया जाता है ऐसा क्यों?

ऊपर लिखे शब्द एक दूसरे के पयार्यवाची हैं, किन्तु इसके अन्दर जो गूढ़ अर्थ छिपा हैं, उन सभी का अर्थ, भाव अलग हैं। महर्षि मनु की सन्तान को 'मानव' कहा गया। आदमी की सन्तान 'आदमी' कहलाये। जिसमें इन्सानियत होती हैं उन्हें 'इन्सान' कहते हैं। जिसने अपना व्यकितत्व स्वयं बनाया उसे 'व्यक्ति'

तथा जिसमें पुरुषार्थ करने की क्षमता है वह 'पुरुष' कहलाया। तात्पर्य यह कि एक होकर भी अनेक नाम से पुकारे जाते हैं।

तैंतीस करोड़ देवताओं का क्या रहस्य हैं?

अष्टवसु, एकादश रुद्र, द्वादश आदित्य, इन्द्र और प्रजापति नाम से तैंतीस संख्या वैदिक देवताओं की कही गयी है। प्रत्येक देवता की विभिन्न कोटियों की दृष्टि से तैंतीस कोटि संख्या लोक व्यवहार में प्रचलित हो गयी। कुछ विद्वानों के कथनानुसार आकाश में तैंतीस करोड़ तारे हैं उन्हें ही तैंतीस करोड़ देवता कहते हैं।

अष्टवसु – आग, ध्रुव, सोम, धरा, अनिल , अनल, प्रत्यूष, प्रभास

एकादश रुद्र – मनु, मन्यु, महत्, शिव, ऋतुध्वज, महिनस, उम्रतेरस, काल, वामदेव, भव और धृत–ध्वज।

आदित्य- अंशुमन, अर्यमन, इन्द्र, त्वष्टा, धातु, पर्जन्य, पूषन, भग, मित्र, वरूण, वैवस्वत्, विष्णु।

भारतीय संस्कृति में भोजन के क्या नियम हैं?

भोजन करते समय सर्व–प्रथम भोजन को प्रणाम करें तो तुम्हारी क्षुधा तृप्त करता हैं। भोजन की कभी निंदा न करें क्योंकि तुम्हें तो भोजन मिल रहा हैं। कितने ऐसे हैं जिन्हें दो–दो दिन तक भोजन ही नहीं मिलता। स्नान के पश्चात् भोजन करें।

बात करते हुए भोजन न करें अर्थात् भोजन करते समय चुप रहना चाहिए। कई लोगों के साथ बैठकर भोजन करते समय बहुत जल्दी भोजन करके उठना नहीं चाहिए। अन्य लोगों को भी खाने का अवसर दें। जूते, चप्पल आदि पहनकर भोजन न करें। कपड़े पर, हाथ पर, पीपल के पत्तों पर, आक के

पत्तों पर, बटपत्र पर भोजन न करें। भोजन में कमल दल के पत्ते, आम और केले के पत्ते, सोने और चाँदी के बर्तन ही शुद्ध माने गये हैं। सबको खिलानेके बाद सबसे अंत में स्वयं भोजन ग्रहण करें।

सनातम धर्म अन्तरजातीय(अन्य जाति में) विवाह करने की आज्ञा क्यों नहीं देता?

दो अलग–अलग जातियों में जो विवाह होता हैं उससे उत्पन्न सन्तान को 'वर्णासंकर' कहा गया हैं यह वर्णासंकर संतान कुल का नाश करके नरक में ले जाने का कारण बनती हैं। वर्णा संकर सन्तान पितरों का तर्पण, पिण्डदान आदि करने के योगय नहीं माने गये हैं क्योंकि इनके पिण्डदान से पितर तृप्त नहीं होते। वैज्ञानिकों ने आम और बेर आदि वृक्षों से दूसरी नस्ल के पौधों का पैबंद लगाकर एक ही वृक्ष में प्रजातियों के फल लेने की विधि तैयार की किन्तु दुःख की बात यह कि इन पौधों में लगे फलों के बीजों से आगे पौधे उत्पन्न करने में क्षमता समाप्त हो जाती हैं। तात्पर्य यह कि वर्णा संकर सन्तान से वंश वृद्धि की सम्भावना समाप्त हो जाती हैं। विजातीय विवाह से दोनों के गुण समाप्त होकर नवीन विकृति युक्त गुणों का प्रादुर्भाव होता हैं। जिस प्रकार शुद्ध देसी घी अति स्वादिष्ट और प्रिय होता है तथा मधु अति मधुर, मीठा होता हैं किन्तु यदि दोनों को मिला दिया जाये तो तेज किस्म का जहर बन जाता हैं। इसी कारण धार्मिक एवम् वैज्ञानिक दोनों कारणों से अन्तरजातीय विवाह का निषेध हैं।

क्या 'गो-मूत्र' पवित्र हैं? या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी गोमूत्र पवित्र हैं?

सनातन धर्म के अनुसार गो(गाय) को माता समान माना गया हैं। गौमाता शुचि(पवित्र) है। उनका मुख का भाग अपवित्र माना गया है किन्तु पीठ के पीछे का भाग पवित्र हैं। गोमूत्र का सेवन करने से प्लीहा और यकृत के रोग

नष्ट हो जाते हैं। ऐसे प्रमाण मिले हैं कि गौमूत्र से कैंसर जैसे भयानक रोगों को भी ठीक करने में सहायक हैं। गौमूत्र वात, पित्त और कफ को समान रखता है, क्योंकि गौमूत्र में वे सारे तत्व मौजूद है जो हमारे शरीर को चाहिए। संक्रमण से उत्पन्न बीमारियाँ भी इसके सेवन से ठीक हो जाती हैं। इस तरह वैज्ञानिक दृष्टि से भी यह पवित्र हैं।

गाय का दूध पवित्र है तो कैसे?

पौष्टिक एवम् सतोगुण प्रधान गाय का दूध देवताओं को चढ़ाया जाता हैं। धर्म शास्त्रों में गौ–दुग्ध को शुचि माना गया हैं। गाय के दूध के सेवन से संग्रहणी, शोथ आदि रोग नष्ट हो जाते हैं। यह मोटापा और मेदा वृद्धि को भी दूर करता हैं। इसमें प्रोटीन एवम् विटामिन उचित मात्रा में पाये जाते हैं जो बालको के लिए अति उत्तम हैं। माँ के दूध के बाद डॉक्टर बच्चों को गाय का दूध पिलाने की सलाह देते हैं।

बिना स्नान किये भोजन करना उचित है अथवा अनुचित?

शास्त्र कहते हैं कि बिना स्नान किये भोजन करना गंदगी खाने के समान होता हैं – “अस्नायी समलं भुक्ते”।

वैज्ञानिक कारण – विज्ञान के अनुसार स्नान करने से शरीर के रोम कूपों का सिंचन हो जाता हैं अर्थात् शरीर से निकले पसीने से जो पानी की कमी हो चुकी होता है, स्नान करने से उसकी पूर्ति हो जाती है। शरीर में शीतलता और स्फूर्ति आ जाती है तथा भूख भी लग जाती हैं। यदि भूख पहले से लग रही है तो बढ़ जाती है तब भोजन करें। इस तरह भोजन का रस हमारे शरीर के लिए पुष्टिवर्द्धक सिद्ध होता हैं। बिना स्नान किये भोजन कर लें तो हमारी जठराग्नि उसे पचाने के कार्य में लग जाती हैं। उसके बाद स्नान करने पर शरीर शीतल पड़ जाता हैं और पाचन–शक्ति मंद पड़ जाती हैं। जिसका परिणाम यह होता

हैं कि भोजन पूर्ण रूप से नहीं पच पाता और कब्ज अथवा गैस की शिकायत उत्पन्न हो जाती हैं।

स्नान करने से पहले क्या कुछ खाया जा सकता हैं?

स्नान करने से पूर्व यदि जोरों की भूख लगी है तो स्नान किये बिना तरल भोजन किया जा सकता हैं, जैसे दूध, गन्ने का रस, जूस आदि तथा फल को भी सेवन कर सकते हैं।

परमात्मा एक हैं या अनेक?

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, यम, दुर्गा आदि परमतत्व परमात्मा के अनेक नाम हैं। कोई विष्णु रूप में परमात्मा की पूजा करता है तो कोई शिव रूप में। कहीं उन परब्रह्म परमात्मा को दुर्गा रूप में पूजते हैं तो कहीं काली के रूप में। तात्पर्य यह कि परमात्मा एक है किन्तु अलग–अलग अनेक रूपों में उनकी पूजा होती हैं।

क्या विष्णु और शिव में भेद हैं?

भगवान् श्री हरि विष्णु और त्रिशूलधारी भगवान् शिव एक दूसरे के पूरक हैं। रामेश्वर सेतु बाँध बाँधने से पहले भगवान् श्री विष्णु के अंशावतार भगवान् श्री राम चन्द्र जी ने सागर पर बालू के शिवलिंग की स्थापना करके भगवान् शिव की पूजा की। भस्मापुर दैत्य को लेकर शिवजी पर जब विपत्ति आई उस समय पार्वती का रूप धारण करके विष्णु जी ने उनकी रक्षा की। शिव जी हमेशा विष्णु जी के ध्यान में मग्न रहते हैं और विष्णु जी भी शिव जी की स्तुति–पूजा करते रहते हैं। इस तरह इनमें कोई भेद नहीं है। जो प्राणी इनके बीच भेद समझता है, उसका कल्याण नहीं हो सकता।

भगवान् के समस्त अवतार भारत भूमि पर ही क्यों हुए जबकि ये सम्पूर्ण जगत के पालक एवम् रक्षक हैं?

भगवान् को अवतरित होने के लिए पवित्र भूमि चाहिए अर्थात् जहाँ यज्ञ, पूजा–पाठ, अराधना–उपासना नित्य होती हो, ऐसी ही पवित्र भूमि पर श्री नारायण का अवतरण होता हैं। जहाँ ऋषि मुनियों एवम् वेदज्ञ ब्राह्मण सदैव मंत्रोच्चारण करते हो। ऐसी पवित्र एवम् पुण्यमयी भारत भूमि ही है। भारतवासियों को इसका गौरव होना चाहिए। भारत भूमि में अवतरित होकर भी भगवान् ने अन्य देशों में रहने वाले अपने भक्तों की रक्षा की। भगवान् श्री कृष्ण जी ने यूनान के 'कालयवन' का, चीन के भगदत्त का वध करके पृथ्वी पर शान्ति की स्थापना की। भगवती दुर्गा ने यूरोप के 'विडालाक्ष' और अमेरिका के 'रक्तबीज' का संहार किया।

देवताओं की दाढ़ी-मूँछे क्यों नही होती?

क्योंकि देवता सदैव युवा रहते हैं। तेजोमय आभामण्डल से आलोकित दिव्य शरीरधारी होते हैं। उन्हें वृद्धावस्था और मृत्यु आलोकित दिव्य शरीरधारी होते हैं। उन्हें वृद्धावस्था और मृत्यु नहीं आती। देवगण सदैव सोलह वर्षीय युवा दिखाई देते हैं।

देवता किसे कहते हैं?

जिनमें अलौकिक वस्तु देने की सामर्थ्य हो तथा जिसमें दिव्य गुण हो, वह देवता हैं।

देवता दिखायी नहीं देते। क्यों?

देवगण सामान्य दृष्टि से नहीं दिखाई देते। देवताओं को देखने के लिए दिव्य दृष्टि की आवश्यकता पड़ती हैं। महाभारत के महान धनुर्धर अर्जुन के मित्र मानव रूप में भगवान् श्री कृष्ण सदैव उनके साथ रहते थे किन्तु उनके 'देव–रूप' को देखने के लिए अर्थात् विराट रूप देखने के लिए जब उन्होंने अर्जुन को 'दिव्य–दृष्टि' प्रदान की तब वे भगवान् श्री कृष्ण के विराट स्वरूप को देख

सकें। जो देवताओं के स्वरूप को देखने के अधिकारी होते हैं उन्हें ही देवता दिखायी देते हैं अन्य को नहीं।

बड़ा कौन होता हैं?

उम्र में बड़ा होने वाला व्यक्ति आदरणीय होता हैं। यह शूद्रों के लिए उपयुक्त कहा गया हैं, धन–सम्पत्ति से परिपूर्ण वैश्यों में बड़ा माना जाता हैं। क्षत्रियों में जो पराक्रमी, बलवान या सिंहासन पर विराजने वाला व्यक्ति बड़ा माना जाता है किन्तु ब्राह्मणों में विद्वान, ज्ञानवान और धर्म शास्त्रों का ज्ञाता हैं, वह बड़ा माना जाता हैं।

धर्म की दृष्टि में पितातुल्य कौन होता हैं?

मंत्र की शिक्षा देने वाले गुरु पिता तुल्य माने गये हैं।

वृद्ध कौन हैं?

आयु अधिक होने और सिर के बालों का सफेद हो जाने पर कोई वृद्ध (बूढ़ा) नहीं हो जाता। वृद्ध वह है जिसने वेदों को पढ़ा और समझा है।

बालक किसे कहते हैं?

जो अल्पज्ञानी या अज्ञानी होते हैं। वे सभी बालक की श्रेणी में आते हैं।

आस्तिक और नास्तिक में क्या अन्तर हैं?

वेद वर्णित ईश्वरीय सत्ता में विश्वास करने वाला 'आस्तिक' की श्रेणी में आता हैं। इसके विपरीत आचरण वाले को 'नास्तिक' कहते हैं। अर्थात् वेदों की निन्दा करने वाले नास्तिक कहे जाते हैं।

प्रातः काल हाथ(कर) का दर्शन क्यों करें?

शास्त्रों में कहा गया हैं–

“कारग्रे वसति लक्ष्मीः, कर मध्ये सरस्वती।

करमूले तू गोविन्द, प्रभात कर दर्शनम्”।।

हाथ के अग्र(आगे) भाग में लक्ष्मी निवास करती हैं , हाथ के मध्य में सरस्वती और मूल में गोविन्द भगवान् का वास होता हैं। इसलिए प्रातः काल हाथ का दर्शन करना चाहिए और जीवन में धन, ज्ञान एवम् ईश्वर को प्राप्त करना चाहिए और जीवन में धन, ज्ञान एवम् ईश्वर को प्राप्त करना मानव के हाथ में है। अतः प्रातःकाल हाथ का दर्शन अवश्य करना चाहिए।

प्रातः काल किन वस्तुओं का दर्शन करना अशुभ होता हैं?

दुराचारिँ स्त्री, एक आँख का काना, नंगा, पापी व्यक्ति, विधवा स्त्री का प्रातः काल दर्शन करना अशुभ माना गया हैं।

इसका वैज्ञानिक कारण क्या हैं?

प्रातः काल देखने योग्य और न देखने योग्य वस्तुओं का विचार मनोविज्ञान पर निर्भर होता है जिसका दिन भर मन मस्तिष्क पर प्रभाव बना रहता हैं।

पुण्य क्या हैं?

दूसरों को कष्ट देना, शारीरिक अथवा मानसिक रूप में प्रताड़ित करना ही पाप हैं।

मनुष्य को किन अवस्थाओं में मौन(चुप) रहना चाहिए?

मैथुन काल में, मूत्र उत्सर्ग करते समय, श्राद्धकाल में, भोजन के समय, दातुन करते समय व्यक्ति को चुप रहना चाहिए।

शौच एवम् लघुशंका के समय क्या मौन रहना आवश्यक हैं? यदि हाँ, तो क्यों?

धार्मिक दृष्टि से शौच और लघुशंका(मूत्र उत्सर्जन) के समय मौन रहना चाहिए। वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर शौच एवम् लघुशंका के समय बोलना, खाँसना, हाँफना हानिकारक है क्योंकि मल के दूषित कीटाणु मुख के माध्यम से शरीर में प्रवेश करके आपको रोगग्रस्त बना सकते हैं। शौच करते समय दाँत भीचने से कभी लकवा नही आता।

हिन्दू लोग पूजा पाठ आदि शुभ कार्य पूर्व दिशा की ओर मुख करके क्यों करते हैं?

सूर्य को हिन्दू धर्म के लोग प्रधान देवता के रूप में मानते एवम् पूजते हैं। सूर्य पूर्व दिशा में उदित होता हैं। वेद भी पूर्वाभिमुख होकर पूजा–पाठ करने की आज्ञा देते हैं।

भारतीय संस्कृति में नारी के स्थान की विवेचन करें।

भारतीय संस्कृति में नारी को बहुत ही उत्तम स्थान प्राप्त हैं जबकि अन्य देशों नारी (स्त्री) को सिर्फ भोग और विलास की सामग्री समझा जाता है किन्तु हमारे भारत देश में नारी को गौरवमयी कहकर सम्मानित किया जाता हैं। वेदों में प्रथम शिक्षा 'मातृ देवोभव' से प्रारम्भ किया जाता है अर्थात् माता देवताओं के समान होती हैं। प्रार्थना के समय भी उच्चारित किया जाने वाला शब्द माता को सम्बोधित करता हैं – "त्वमेव माता च पिता त्वमेव" अर्थात् माता का स्थान पिता से भी उच्च है। मातृ शक्ति का स्मरण ईश्वर(प्रभु) से पहले होता हैं अर्थात् जैसे राधे कृष्ण, गौरी शंकर या गिरजापति, राधे श्याम, सीता राम आदि। मनुस्मृति अध्याय 3/श्लोक 56 के अनुसार– "यत्रनार्थास्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।"

अर्थात् जिस घर में स्त्रियों का सम्मान होता हैं उस घर की स्थिति स्वर्ग के समान हो जाती हैं। वहाँ देवताओं का निवास होता हैं और स्त्रियों के लिए

पति सेवा ही सर्वश्रेष्ठ है। स्त्रियों को किसी गुरु की आवश्यकता नहीं होती। पति के चरणों की सेवा में ही उन्हें भगवान् के दर्शन होते हैं।

लक्ष्मी भगवान् विष्णु के चरणों की सदैव सेवा करती रहती हैं। इसका क्या रहस्य हैं?

इसका रहस्य है कि जो मनुष्य लक्ष्मी प्राप्त करने के अभिलाषी हैं उन्हें प्रत्क्षतः लक्ष्मी को नहीं बल्कि भगवान् श्री नारायण की पूजा, आराधना करनी चाहिए। भगवान् श्री नारायण के प्रसन्न होने पर लक्ष्मी जी उस प्राणी को सर्वरूप सम्पन्न कर देती हैं अर्थात् लक्ष्मी को पाने के लिए श्री नारायण की शरण में जाना होगा।

तुलसी के पौधे को लोग घर के आँगन में क्यो लगाते हैं?

तुलसी का पौधा हिन्दू परिवार की एक पहचान है तथा साथ ही उसकी धार्मिकता एवम् सात्विक भावना का परिचय भी देता हैं। हिन्दू स्त्रियाँ तुलसी पूजन करने सौभाग्य एवम् वंशवृद्धि की कामना से करती हैं। रामायण कथा में वर्णित प्रसंग के अनुसार रामदूत हनुमान जी सीता का पता लगाने जब समुद्र लाँघकर लंका गये तो वहाँ उन्होंने एक घर के आँगन में तुलसी का पौधा देखा। जो कि विभीषण का घर था तात्पर्य यह कि तुलसी पूजन की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही हैं।

वैज्ञानिक कारण – तुलसी की पत्तियों में संक्रामक रोगों को रोकने की अद्‌भुत शक्ति निहित होती हैं। तुलसी एक दिव्य औषधि का वृक्ष हैं। इसके पत्ते उबालकर पीने से सर्दी, जुकाम, खाँसी एवम् मलेरिया से तुरन्त राहत मिलती हैं। तुलसी कैंसर जैसे भयानक रोग को भी ठीक करने में सहायक है। अनेक औषधीय गुण होने के कारण इसकी पूजा की जाती हैं।

मुसलमान लोग पश्चिम दिशा की ओर मुख करके नमाज अदा करते हैं। क्या इसका कोई विशेष कारण हैं?

मुसलमानों में काबा(खुदा) का घर पश्चिम की ओर मानते हैं इसलिए मुसलमान भाई पश्चिम की ओर मुँह करके नमाज अदा करते हैं। उनकी मस्जिदें भी ऐसे ही ढंग से बनायी जाती हैं।

पुरूषों की दाढ़ी में बाल आते हैं, परन्तु औरतों की दाढ़ी में बाल क्यों नहीं आते?

ग्यारह से तेरह वर्ष की उम्र के वयस्क छोटे बच्चों में यौन ग्रंथियों का विशेष विकास होता हैं। इस उम्र में पुरुषों की यौन ग्रंथियां एनट्रोजन हार्मोन पैदा करती हैं। जो दाढ़ी और छाती के बालों में वृद्धि करते हैं। जबकि स्त्रियों की यौन ग्रंथियां एन्ट्रोजन की बजाय एस्ट्रोजन हार्मोन पैदा करती हैं।

धार्मिक कार्य जैसे पूजा-आराधना, जप या अनुष्ठान करते समय हिन्दू लोग आसन क्यों बिछाते हैं?

धर्म शास्त्र के वचनानुसार आसन के बिना पूजा–पाठ आदि कृत्य करना निर्थक सिद्ध होता हैं। खाली भूमि पर बैठकर पूजन करने से दुःख, लकड़ी पर बैठकर पूजन करने से दुर्भाग्य, बाँस पर दरिद्रता, कपड़े पर बैठने से तपस्या की हानि, पत्थर पर बैटकर पूजा पाठ करने से रोग का आगमन होता हैं। उपरोक्त कारणों को ध्यान में रखकर विशेष प्रकार के आसनों का विधान बना।

आसनों के बिछाने का कोई वैज्ञानिक कारण हो तो वह भी स्पष्ट करें?

पूजा–पाठ करने से मनुष्य में एक विशेष प्रकार की शक्ति का संचार होता हैं। वह शक्ति ‘लीक’ होकर ‘अर्थ’ न हो जाये इसलिए पूजा करने वाले और भूमि के बीच विद्‌युत कुचालक के रूप में आसनों का प्रयोग करते हैं। हमारे ऋषि

मुनियों ने कुशासन को तथा व्याघ्रचर्म, मृगचर्म को आसनों में सर्वश्रेष्ठ कहा हैं। आप स्वयं अनेक तस्वीरों में भगवान् शिवजी को व्याघ्रचर्म के आसन पर समाधिस्थ अवस्था में देख सकते हैं।

भाभी को 'सिस्टर-इन-लॉ' कहना उचित नहीं हैं।

अंग्रेजी में 'सिस्टर–इन–लॉ' का अर्थ साली भी होता हैं और भाभी भी। साली से लोग अच्छा–खासा हँसी मजाक भी करते हैं। मुहावरे आदि में लोग 'साली को आधी घरवाली' भी कहते हैं। पत्नी का स्वर्गवास हो जाने पर साली से विवाह किया जा सकता है किन्तु भाभी से नही। क्योंकि हिन्दू धर्म में बड़ी भाभी माता के समान पूज्यनीय होती है। अतः अंग्रेजी के 'सिस्टर–इन–लॉ' शब्द का प्रयोग करके भाभी के सम्माननीय रिश्ते और भारतीय संस्कृति को गाली न दें।

'माँ' को 'मदर' या 'मम्मी' न कहें।

MOTHER(मदर) शब्द अंग्रेजी भाषा में ईसाईयों द्वारा प्रचलित किया गया हैं। ईसाईयों के धर्म स्थल चर्च में जो महिला रहती है उसे 'मदर' कहते हैं। एक ऐसी स्त्री जो अपने पति को अपना सर्वस्व समझती हैं, उसके गर्भ से उत्पन्न संतान अपनी जननी को 'मदर' कहे तो शोभा नहीं देता। 'माँ' शब्द में जो लगाव, जो चाहत है और प्यार छलकता है वह ममता 'मदर' शब्द में ढूँढने पर भी नहीं मिलेगी। मम्मी अंग्रेजी शब्द हैं जिसका अर्था होता है मसाला लगाकर सुरक्षित रखा गया मृतक शरीर। अतः माँ को 'मम्मी' न कहें।

अपने पिता को 'डैडी' या 'डैड' कहकर सम्बोधित न करें। यह शब्द जिन्दा इंसान को मार डालने के समान हैं।

पूर्व समय में लोग अपने पिता को पिताजी कहकर सम्बोधित करते थे। समय के बदलाव के साथ लोहग फैशन की ओर अन्धाधुन्ध भागने लगे। कुछ समय

बाद पिताजी से 'पापा' हुए फिर पापा से डैडी और आधुनिक फैशनपरस्त जिदंगी में 'डैडी' से 'डैड' अर्थात् डेड हो गये। 'डेड' होने का मतलब आप समझ ही गये होंगे। डेड अंग्रेजी शब्द हैं जिसका अर्था होता है 'मर गये'। मैं अपने उन फैशनपरस्त युवाओं को सम्बोधित कर के कहना चाहता हूँ कि इस जानकार के बाद अपने पिता को 'डैडी' या 'डैड' कहना छोड़ दें। पिता जो कि आदरणीय होते हैं, उन्हें सम्मानजनक शब्दों से सम्बोधित करें।

हिन्दू धर्म में मृतक के परिजन उसके शव को जलाते हैं जबकि मुस्लिम धर्म के लोग शवों को दफनाते हैं। इनमें से दफनाना उचित है या शव को जलाना उचित हैं?

एक शव को दफनाने के लिए कम से कम दो गज जमीन चाहिए। इसी तरह मुस्लिम धर्म के जितने भी लोगों की मृत्यु होती हैं उन सभी के लिए प्रत्येक को दो-दो गज जमीन चाहिए। अगर इसी तरह हिन्दू लोग भी अपने शवों को दफनाने लगें तो एक दिन ऐसा आयेगा कि सम्पूर्ण धरती कब्रिस्तान बन जायेगी। मुस्लिम हो या ईसाई, हम किसी विशेष धर्म की बात नहीं कर रहे हैं। बल्कि उन सभी से सम्बोधित हैं जिस धर्म के लोग शवों को दफनाते हैं। दफना देने के बाद निश्चित है लाश में सड़न उत्पन्न होगी। इस तरह वायुमण्डल में हमारे शरीर को क्षति पहुँचाने वाले वायरस फैलेंगे। कब्रिस्तानों के कारण संसार की कितनी उपयोगी भूमि आज व्यर्थ हो रही हैं और हिन्दुओं में लोग मृतक की देह को अग्नि के हवाले कर देते हैं। थोड़ी ही देर में अग्नि उस शरीर को भस्मात कर देती हैं। हिन्दू एक दो गज जमीन पर लाखों शवों का दाह-संस्कार कर डालते हैं।

'यज्ञोपवीत' शब्द का क्या अर्थ हैं? उचित रूप से वर्णन करें।

यज्ञ+उपवीत=यज्ञोपवीत, अर्थात् जिसे यज्ञ करने का पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त हो जाये। यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण किये बिना किसी को गायत्री जप अथवा वेद पाठ का अधिकार प्राप्त नहीं होता।

जनेऊ क्या हैं?

यज्ञोपवीत का ही संक्षिप्त रूप हैं जो 'जन' और 'ऊ' के मिलने से बना हैं। ग्रामीण लोग अधिकांशतः इसी शब्द का प्रयोग करते हैं।

ब्रह्मसूत्र किसे कहते हैं?

यज्ञोपवीत को ही ब्रह्मसूत्र कहते हैं। इसके पहनने से व्यक्ति ब्रह्म के प्रति समर्पित हो जाता हैं अर्थात् ब्रह्म सूत्र धारण करने के उपरान्त उस व्यक्ति को विशेष नियम, आचरणों का पालन करना अनिवार्य हो जाता हैं।

क्या सभी जनेऊ एक ही प्रकार के होते हैं?

जनेऊ कई प्रकार के होते हैं – तीन धागे वाले, अथवा छः धागे वाले।

किस व्यक्ति को कितने धागों वाला जनेऊ धारण करना चाहिए।

ब्रह्मचारी के लिए तीन धागे वाले जनेऊ का विधान हैं, विवाहित पुरुष को छः धागे वाला जनेऊ धारण करना चाहिए।

जनेऊ कान पर क्यों चढ़ाते हैं?

लघुशंका या दीर्घशंका के समय जनेऊ को अपवित्र होने से बचाने के लिए उसे खींचकर कानों पर चढ़ाते हैं। दूसरा कारण यह कि जनेऊ कान पर चढ़ा हुआ देखकर दूसरे व्यक्ति दूर से ही समझ जाते हैं कि ये लघुशंका(मूत्र) अथवा दीर्घशंका(शौच) से आये हैं और अभी हाथ पैर अथवा मुँह का प्रक्षालन नहीं किये हैं।

यज्ञोपवीत के तीन धागों तथा छः धागों का क्या तात्पर्य हैं?

तीन धागों वाला यज्ञोपवीत वेदत्रयी ऋग, यजु तथा साम की रक्षा करता हैं। तीनों लोगों भू, भुवः और स्वः को भी निर्देशित करता हैं। त्रिदेव–ब्रह्मा, विष्णु और महेश यज्ञोपवीत धारण करने वाले व्यक्ति से प्रसन्न रहते हैं। यह तीन सूत्रों वाला यज्ञोपवीत ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य में सत्व, रज और तम इन तीन गुणों की सगुणात्मक वृद्धि हैं। धार्मिक व्याख्या के अतिरिक्त यज्ञोपवीत के तीन सूत्रों में प्रथम सूत्र संयमित जीवन जीने का संदेश देता हैं। दूसरा सूत्र माता के प्रति कर्तव्य की भावना और तीसरा सूत्र पिता के प्रति कर्तव्य भावना का बोध कराता हैं। छः सूत्रों वाले यज्ञोपवीत में तीन सूत्र का उपरोक्त अर्थ समझें। चौथे सूत्र में पत्नी के प्रति समर्पण, पांचवे का सास के प्रति कर्तव्य पालन और छठा सूत्र ससुर के प्रति कर्तव्य पालन का स्मरण कराता हैं।

लघुशंका के समय जनेऊ को दाहिने कान पर ही क्यों लपेटते हैं? इसका कोई वैज्ञानिक कारण हो तो स्पष्ट करें।

यदि दाहिने कान की एक विशेष नाड़ी जिसे आयुर्वेद ने 'लोहितिका' नाड़ी का नाम दिया है, उस नाड़ी को दबा दिया जाये तो पूर्ण स्वस्थ आदमी का भी पेशाब निकल जाता हैं। ऐसा क्यों? इसलिए कि उस नाड़ी का अण्डकोष से सीधा सम्पर्क होता है। 'हर्निया' नामक बीमारी का इलाज करने के लिए डॉक्टर लोग दाहिने कान की नाड़ी का छेदन करते हैं। इस कान को जनेऊ से बाँधने का यही अर्थ हैं कि मूत्र की अन्तिम बूँद भी उतर जाये।

माला फेरने से क्या होता है? माला फेरने का वैज्ञानिक आधार क्या हैं?

माला फेरते समय अँगूठे और उंगली के मध्य घर्षण से एक प्रकार की विद्युत उत्पन्न होती हैं जो धमनियों द्वारा होकर सीधी 'हृदय–चक्र' को प्रभावित करती है जिससे चंचल मन स्थिर हो जाता हैं।

‘एक्युप्रेशर द्वारा इलाज’ एक ऐसी विद्या है जो शरीर की विभिन्न नसों से इलाज करने की पद्धति हैं। विद्वानों ने मानव नसों का विविधत् अध्ययन करने के उपरान्त इस विद्या का नाम ‘एक्युप्रेशर’ रखा। दोनो हाथ की हथेलियों के विभिन्न भागों को दबा–दबाकर शरीर के अन्य भागों का इलाज इस विद्या के अन्तगर्त किया जाता हैं। मध्यमा अंगुली की नस का सीधा सम्बन्ध ह्रदय से होता हैं। इसीलिए माला जपते समय मध्यमा अंगुली का प्रयोग किया जाता हैं।

माला क्या हैं तथा इसमें 108 मनके ही क्यों होते हैं? उचित कारणों सहित स्पष्ट करें।

माला एक पवित्र वस्तु हैं जो शुद्ध एवम् पवित्र वस्तुओं द्वारा बनायी जाती हैं। इसमें 108 मनके होते हैं जो साधक को जप संख्या की गणना करने में सहायक होते हैं। इन 108 मनकों का रहस्य यह है कि भारतीय मुनियों ने एक वर्ष में 27 नक्षत्र बतलाये हैं और प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं। इस प्रकार 27*4=108 हुए। यह संख्या पवित्र ही नही बल्कि अत्यंत पवित्र मानी गयी हैं।

माला धारण करने का वैज्ञानिक कारण बतायें। माला गले में ही क्यों धारण करते हैं?

जप करते समय साधकों को होंठ एवम् जिह्वा को हिलाना पड़ता हैं जिस कारण कण्ठ की धमनियाँ प्रभावित होती हैं और साधक को कण्ठमाला, गलगण्ड आदि रोग होने की संभावना बन जाती हैं। ऐसे रोगों के होने की संभावना से रक्षा के लिए औषधि युक्त काष्ठ तुलसी, रुद्राक्ष आदि की माला धारण करते हैं।

विभिन्न मालाओं के धारण करने से क्या लाभ हैं?

तंत्रसार के अनुसार

शत्रु विनाश के लिए ‘कमल गट्टे’ की माला।

मारण एवम् तामसी कार्यों के लिए ‘सर्प की हड्डी’ की माला।

विष्णु जी को प्रसन्न करने के लिए ‘तुलसी’ की माला।

दीर्घायु होने के लिए महामृत्युजय मंत्र का जप करना हो तो रूद्राक्ष की माला।

सन्तान गोपाल का जप करना हो तो ‘जीव पुत्र’ की माला।

पाप नाश करने के लिए ‘कुश–ग्रन्थि’ की माला

विघ्न हरण हेतु ‘हरिद्रा’ की माला

नजर, टोने–टोटके से बचाव के लिए ‘व्याघ्र नख’ की माला धारण करें।

सूक्ष्म किसे कहते हैं?

जो दिखायी न दे किन्तु उसकी उपस्थिति का आभास हो, उसे सूक्ष्म कहते हैं।

सूक्ष्म और स्थूल में अन्तर बताइयें।

बर्फी, पेड़ा, लड्डू, चीनी आदि स्थूल हैं और उसमें निहित ‘स्वाद रस’ सूक्ष्म हैं। मनुष्य देह स्थूल हैं और चेतना आत्मा सूक्ष्म हैं।

प्रमाण कितने प्रकार के होते हैं?

प्रमाण तीन प्रकार के माने गये हैं – अनुमान प्रमाण, प्रत्यक्ष प्रमाण और आप्त प्रमाण।

जैसे किसी स्थान पर धुआं उठ रहा हैं आप वहाँ अग्नि होने का अनुमान करेंगें, क्योंकि बिना अग्नि के धुआं उठना संभव नहीं है। यह अनुमान प्रमाण हैं। प्रत्यक्ष प्रमाण के अन्तगर्त वे वस्तुएँ आती हैं जिन्हें हमारी आँखे देखती हैं अथवा अनुभव करती हैं। जैसे – पुष्प में सुगन्ध हैं, जल में शीतलता हैं। ये

सभी प्रत्यक्ष प्रमाण हैं तथा आप्त प्रमाण ऋषि–मुनियों द्वारा कहे गये वचनों को कहते हैं जो न जाने सैंकड़ों हजारो वर्ष पूर्व कह चुके हैं और वे स्वयं इस धरती पर जीवित नहीं है किन्तु उनके कहे गये वचनों का हम पालन करते हैं।

ब्रह्म मुहूर्त्त क्या हैं? ब्रह्म मुहूर्त्त में उठने के क्या लाभ हैं?

रात्रि के अन्तिम प्रहर को ब्रह्म मुहूर्त्त कहते हैं। निद्रा त्याग करने का शास्त्र विहित यह समय सर्वोत्तम होता हैं।

ब्रह्म मुहूर्त्त में जागने से मनुष्य को सौन्दर्य, बल, विद्या, बुद्धि और स्वस्थता प्राप्त होती हैं।

वैज्ञानिक शोधों के अनुसार प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त्त में वायु मण्डल प्रदूषण रहित होता हैं। इसमें उस समय 41 प्रतिशत ऑक्सीजन होती है जिसे हम प्राण वायु के रूप में सदैव प्रयोग करते हैं। 155 % नाइट्रोजन, 4% कार्बन डाईऑक्साइड होती हैं। कार्बन डाईऑक्साइड सबसे दूषित वायु होती हैं जो फेफड़ो के लिए हानिकारक हैं। सूर्योदय के साथ ही सड़कों पर अनेक प्रकार के वाहन चलने लगते हैं जिनसे कार्बन डाईऑक्साइड निकलती हैं और वायु मण्डल में प्रदूषण फैलने लगता हैं। जिसकी मात्रा 4% से बढ़कर 60% तक हो जाती हैं। आयुर्वेद के दृष्टिकोण से ब्रह्म मुहूर्त्त में उठकर टहलने से संजीवनी शक्ति से परिपूर्ण मलयगिरी की ओर से आने वाली हवा शरीर को स्पर्श करके नव शक्ति का संचार करती हैं। इस अमृततुल्य वायु का सेवन करना अति लाभदायक हैं।

दातुन करने के लिए कौन सी वनस्पति श्रेष्ठ हैं?

आयुर्वेद के अनुसार गूलर, नीम, कीकर(बबूल), वज्रदंती, आदि वृक्षों की टहनियों का दातुन करें। नीम एक ऐसा वृक्ष हैं जिसकी जड़, तना, पत्तियाँ, छालें आदि औषधीय गुणों से भरपूर हैं। कुछ लोगों का मत है कि टूथपेस्ट

और ब्रुश से दाँतों की जितनी अच्छी सफाई होती हैं उतनी अच्छी सफाई दातुन से सम्भव नहीं हैं। यह सत्य है कि ब्रुश दांतों की अच्छी सफाई करता हैं। वह दाँतों के मैल को अपने में भर लेता है और दूषित हो जाता हैं। टूथपेस्ट के बचे अवशेष के साथ पायरिया के कीटाणु ब्रुश की तली में चिपके रहते हैं फिर अगले दिन ब्रुश करते समय वे कीटाणु दाँतों से चिपक जाते हैं। इस तरह टूथपेस्ट–ब्रुश से ज्यादातर पायरिया होने के चांस रहते हैं। ब्रुश करने वालों को संभवतः प्रत्येक सप्ताह नया ब्रुश ले लेना चाहिए अर्थात् एक सप्ताह से अधिक दिनों तक एक ब्रुश प्रयोग में न लायें।

बेर की दातुन से क्या लाभ हैं?

बेर की दातुन से दाँतों की सफाई तो होती हैं किन्तु जो व्यक्ति अपने गले में मधुरता लाने का इच्छुक हो व नियमित रूप से बेर की दातुन प्रयोग करें।

अपामार्ग की दातुन के लाभ बतायें।

अपामार्ग की दातुन स्मरण शक्ति में वृद्धि करती हैं और मुख की दुर्गन्ध भी दूर भगाती हैं।

नीम की दातुन क्यों करें?

नीम की दातुन से एक नहीं बल्कि अनेकों लाभ हैं। प्रथम तो दाँतों की सफाई होती है, दूसरा लाभ पायरिया जैसे रोगों में नाम की दातुन अति उत्तम औषधि हैं। नीम की दातुन का तीसरा अति प्रभावकारी लाभ यह हैं कि दातुन करते समय जो दातुन का रस पेट में चला जाता हैं तो आंत में होने वाली कीड़िया (कृमि) मर जाते हैं। उन कीडियों के कारण पेट में अनेक प्रकार के विकार उत्पन्न होते हैं। जैसे – गैस की समस्या, अपच आदि। नीम की दातुन से हमारे मुँह में अधिक मात्रा में लार बनती है जो पेट के एसिड़ को खत्म करता है और पाचन तंत्र को दुरुस्त करता हैं। अमेरिका यूरोप के लोग भी अब भारत से

नीम मगांकर, नीम की दातुन करने लगे हैं और हम मूर्खो की तरह हड्डियों के चूरे और केमिकल से बने कोलकेट, पेप्सोडेन्ट आदि उपयोग करने लगे हैं।

गूलर की दातुन की लाभ बतायें।

जिसकी जुबान लड़खड़ाती हो, बोलते समय हकलाता हो, जीभ में कालापन हो। ऐसे व्यक्तियों के लिए गूलर की दातुन फायदेमंद हैं।

अक्सर पूजा-पाठ के समय ब्राह्मण लोग पूजा पर बैठने वाले व्यक्ति के हाथ में जल और कुश रखकर संकल्प कराते हैं। यह संकल्प क्या हैं?

किसी कार्य के लिए शपथ ग्रहण करना, द्दढ़ प्रतिज्ञ होना ही संकल्प कहलाता हैं। पूर्व काल में वामन भगवान जब असुरराज बलि के पास याचक बनकर गये तब उन्होंने सर्वप्रथम राजा बलि को संकल्प उठाने के लिए कहा। राजा बलि के संकल्प करने के उपरान्त वामन भगवान के तीन डग भूमि की याचना की थी। आत्म–विश्वास और विनम्रतापूर्वक शुभ कार्य करने को प्रेरित करने वाले अनुष्ठान का नाम संकल्प है।

हाथ में जल लेकर ही संकल्प क्यों करते हैं?

जल लेकर संकल्प करने का तात्पर्य यह कि जिस कार्य के लिए मैं सकल्प कर रहा हूँ, यदि वह कार्य न करूँ तो मुझे जल पीने को न मिले। वेद एवम् शास्त्रों के अनुसार जल के स्वामी वरूण देव हैं। प्रतिज्ञा पालन न करने वाले को वरूण देव कठोर दण्ड देते हैं। जल के बिना प्राणी का जीवित रहना असंभव है, अतः जल ही प्राण है और इसी जल को हाथ में लेकर संकल्प करना पूर्ण वचनबद्धता होती हैं।

सूर्य को जल देने का वैज्ञानिक कारण स्पष्ट करें।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार सूर्य को जल दिये बिना अन्न ग्रहण करना पाप हैं। अंलकारिक भाषा में वेद कहते हैं कि सन्ध्या के समय सूर्य को दिये गये

अर्घ्य के जलकण वज्र बनकर असुरों का नाश करते हैं। विज्ञान की दृष्टि में असुर कौन है? मनुष्यों को प्रताड़ित करने वाले ये असुर कौन हैं? ये असुर हैं – टायफाइड, निमोनिया, राजयक्ष्मा आदि रोग जिनको नष्ट करने की दिव्य शक्ति सूर्य की किरणों में होती हैं। एन्थ्रेक्स के वायरस जो कई वर्षों के शुद्धिकरण से नहीं मरते, वे सूर्य की किरणों से एक–डेढ़ घंटे में मर जाते हैं। हैजा, निमोनिया, चेचक आदि के कीटाणु पानी में डालकर उबालने पर नहीं मरते किन्तु सूर्य की प्रभातकालीन किरणों से शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। सूर्य को अर्घ्य(जल) देते समय साधक के ऊपर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। शास्त्र अनुसार प्रातः काल पूर्व की ओर मुख करके जल देना चाहिए। जल के पात्र(लोटे) को छाती के बराबर ऊँचाई रखकर जल गिरायें और लोटे के उभरे भाग को तब तक देखते रहें जब तक जल समाप्त हो जाये। ऐसा करने से आँखों में मोतियाबिन्दु नहीं होता।

यदि राम और कृष्ण को परमात्मा मान लिया जाये तो जब इन्होंने पृथ्वी पर अवतार ग्रहण किया उस समय समस्त संसार ईश्वर विहीन हो गया। स्पष्ट करें।

परमात्मा एक होते हुए भी अनेक हैं फिर वे सर्वव्याप्त भी हैं। एक स्थान पर अवतार लेने का अर्थ यह नहीं कि संसार ईश्वर शून्य हो गया । वे अपने अंश में सर्वत्र उपस्थित रहते हैं।

लक्ष्मी को चंचला क्यों कहा जाता हैं?

चंचला अर्थात् जिसका मन चंचल हो। लक्ष्मी जी को चंचला कहने का तात्पर्य है कि यह कहीं एक स्थान पर स्थिर नहीं रहती। रूपये पैसों का उदाहरण ले लें– आज जो नोट हमारे पास है कल तुम्हारे पास होगा, वही नोट परसों और के हाथ में होगा।

लक्ष्मी कहाँ रहती हैं?

व्यवहारिक एवम् वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाये तो गंदगी वाले स्थान या गंदे मनुष्य से लक्ष्मी सदैव दूर रहती हैं। अधिक भोजन करने वाला, गंदे कपड़े पहनने वाला, आलसी, दिन में सोने वाला व्यक्ति से हीन होती है। इसलिए कि जो कर्महीन होगा, आलसी होगा, या गंदगी से भरा होगा भला उसके पास लक्ष्मी (रूपया) कहाँ से आयेगी। महाभारत में लक्ष्मी जी ने रुक्मिणी से कहा कि हे सखी! कलहप्रिय, निन्दक, मलिन, असावधान और निर्लज्ज लोगों के पास मैं नहीं ठहरती। जो कलहप्रिय होते हैं, दूसरों की निन्दा करते हैं, उनके पास कर्म करने के लिए समय ही नहीं होता। कर्म न करने की स्थिति में आगे बढ़ने के मार्ग स्वतः ही बंद हो जाते हैं। आलसी व्यक्ति रोगी हो जाता हैं, उसी तरह असावधान व्यक्ति अवसर खोकर पछताते रह जाते हैं।

गणेश जी का वाहक मूषक (चूहा) क्यों हैं?

गणेश जी का भारी–भरकम शरीर और सवारी मूषक की। यह बड़ा अजीब सा लगता हैं सत्य तो यह है कि गणेश जी बुद्धि के देवता हैं और चूहा तर्क का प्रतीक माना गया हैं। बुद्धि सदैव तर्क पर ही सवार रहती हैं।

सनातन धर्म के लोग पूजा-पाठ या अन्य शुभ अवसरों पर स्वास्तिक का चिन्ह क्यों बनाते हैं? इसका क्या रहस्य हैं?

स्वास्तिक चिन्ह केवल हिन्दुओं में ही नहीं प्रचलित हैं अन्य धर्म सम्प्रदाय के लोग भी इसे पवित्र मानते हैं। ईसाइयों में पवित्र क्रास को लोग गले में धारण करते हैं तथा स्वास्तिक को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो ‘धन आवेश’ के रूप में समझ सकते हैं। धन आवेश दो ऋणात्मक शक्ति प्रवाहों के मिलने से बना। यह स्वास्तिक का अपभ्रंस ही है। ईसाइयों का क्रॉस हैं विच्छेद करने पर शब्द मिलता है – करि+आस्य ‘क्राइस्ट’ का संधि विच्छेद करने पर तीन शब्द मिलते हैं – कर+आस्य+इष्ट इसका तात्पर्य हाथी के समान मुख वाला होता हैं। हाथी के समान मुख वाले अग्रपूज्य देव गणेश जी हैं। स्वास्तिक चिन्ह

श्री गणेश जी के साकार विग्रह का स्वरूप हैं। स्वास्तिक की चार भुजाएँ श्री विष्णु जी के चार हाथ हैं। स्वास्तिक चारों दिशाओं की ओर शुभ संकेत देता हैं। स्वास्तिक 'श्री' (लक्ष्मी) का भी प्रतीक हैं। भगवान विष्णु और धन सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी का प्रतीक स्वास्तिक हैं। पूजा–पाठ या अन्य शुभ कर्मों के अवसर पर ब्राह्मण लोग शुभत्व की प्राप्ति के लिए 'स्वास्तिवाचन' करते हैं।

संस्कार किसे कहते हैं?

शरीर एवम् वस्तुओं की शुद्धि हेतु समय–समय पर जो कर्म किये जाते हैं उन्हें 'संस्कार' कहते हैं।

वेदव्यास के अनुसार संस्कार सोलह प्रकार के होते हैं –

1.गर्माधान 2.पुंसवन 3.सीमन्तोन्नयन 4.जातकर्म 5.नाकरण 6. निष्क्रमण 7.अन्नप्राशन 8.चूड़ाकर्म 9.कर्णवेध 10. यज्ञोपवीत 11.वेदारम्भ 12.केशान्त 13.समावर्तन 14.विवाह 15.आवसश्याधाम 16.श्रौता धाम।

1. गर्भाधान : गर्भाधान संस्कार महर्षि चरक ने कहा है कि मन का प्रसन्न और पुष्ट रहना गर्भधारण के लिए आश्यक है इसलिए स्त्री एवं पुरुष को हमेशा उत्तर भोजन करना चाहिए और सदा प्रसन्नचित्त रहना चाहिए। गर्भ की उत्पत्ति के समय स्त्री और पुरुष का मन उत्साह, प्रसन्नता और स्वस्थ्यता से भरा होना चाहिए। उत्तम संतान प्राप्त करने के लिए सबसे पहले गर्भाधान–संस्कार करना होता है। माता–पिता के रज एवं वीर्य के संयोग से संतानोत्पत्ति होती है। यह संयोग ही गर्भाधान कहलाता है। स्त्री और पुरुष के शारीरिक मिलन को गर्भाधान–संस्कार कहा जाता है।
गर्भस्थापन के बाद अनेक प्रकार के प्राकृतिक दोषों के आक्रमण होते हैं, जिनसे बचने के लिए यह संस्कार किया जाता है। जिससे गर्भ सुरक्षित रहता है। विधिपूर्वक संस्कार से युक्त गर्भाधान से अच्छी और सुयोग्य संतान उत्पन्न होती है।

2. पुंसवन : : पुंसवन संस्कार तीन महीने के पश्चात इसलिए आयोजित किया जाता है क्योंकि गर्भ में तीन महीने के पश्चात गर्भस्थ शिशु का मस्तिष्क विकसित होने लगता है। इस समय पुंसवन संस्कार के द्वारा गर्भ में पल रहे शिशु के संस्कारों की

नींव रखी जाती है। मान्यता के अनुसार शिशु गर्भ में सीखना शुरू कर देता है, इसका उदाहरण है अभिमन्यु जिसने माता द्रौपदी के गर्भ में ही चक्रव्यूह की शिक्षा प्राप्त कर ली थी।

3. सीमंतोन्नायन सीमंतोन्नायन संस्कार गर्भ के चौथे, छठवें और आठवें महीने में किया जाता है। इस समय गर्भ में पल रहा बच्चा सीखने के काबिल हो जाता है। उसमें अच्छे गुण, स्वभाव और कर्म का ज्ञान आए, इसके लिए मां उसी प्रकार आचार−विचार, रहन−सहन और व्यवहार करती है। इस दौरान शांत और प्रसन्नचित्त रहकर माता को अध्ययन करना चाहिए।>

4. जातक्रम : बालक का जन्म होते ही जातकर्म संस्कार को करने से शिशु के कई प्रकार के दोष दूर होते हैं। इसके अंतर्गत शिशु को शहद और घी चटाया जाता है साथ ही वैदिक मंत्रों का उच्चारण किया जाता है ताकि बच्चा स्वस्थ और दीर्घायु हो।>

5. नामकरण : जातकर्म के बाद नामकरण संस्कार किया जाता है। जैसे की इसके नाम से □ □ विदित होता है कि इसमें बालक का नाम रखा जाता है। शिशु के जन्म के बाद 11वें दिन नामकरण संस्कार किया जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार बच्चे का नाम तय किया जाता है। बहुत से लोगों अपने बच्चे का नाम कुछ भी रख देते हैं जो कि गलत है। उसकी मानसिकता और उसके भविष्य पर इसका असर पड़ता है। जैसे अच्छे कपड़े पहने से व्यक्तित्व में निखार आता है उसी तरह अच्छा और सारगर्भित नाम रखने से संपूर्ण जीवन पर उसका प्रभाव पड़ता है। ध्यान रखने की बात यह है कि बालक का नाम ऐसा रखें कि घर और बाहर उसे उसी नाम से पुकारा या जाना जाए।

6. निष्क्रमण : इसके बाद जन्म के चौधे माह में निष्क्रमण संस्कार किया जाता है। निष्क्रमण का अर्थ होता है बाहर निकालना। हमारा शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश आदि से बना है जिन्हें पंचभूत कहा जाता है। इसलिए पिता इन देवताओं से बच्चे के कल्याण की प्रार्थना करते हैं। साथ ही कामना करते हैं कि शिशु दीर्घायु रहे और स्वस्थ रहे।

7. अन्नप्राशन : अन्नप्राशन संस्कार संस्कार बच्चे के दांत निकलने के समय अर्थात 6-7 महीने की उम्र में किया जाता है। इस संस्कार के बाद बच्चे को अन्न खिलाने की शुरुआत हो जाती है। प्रारंभ में उत्तम प्रकार से बना अन्न जैसे खीर, खिचड़ी, भात आदि दिया जाता है।

8. चूड़ाकर्म : सिर के बाल जब प्रथम बार उतारे जाते हैं, तब वह चूड़ाकर्म या मुण्डन संस्कार कहलाता है। जब शिशु की आयु एक वर्ष हो जाती है तब या तीन वर्ष की आयु में या पांचवें या सातवें वर्ष की आयु में बच्चे के बाल उतारे जाते हैं। इस संस्कार से बच्चे का सिर मजबूत होता है तथा बुद्धि तेज होती है। साथ ही शिशु के बालों में चिपके कीटाणु नष्ट होते हैं जिससे शिशु को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है। मान्यता है गर्भ से बाहर आने के बाद बालक के सिर पर माता-पिता के दिए बाल ही रहते हैं। इन्हें काटने से शुद्धि होती है।

9. कर्णवेध : : कर्णवेध संस्कार का अर्थ होता है कान को छेदना। इसके पांच कारण हैं, एक- आभूषण पहनने के लिए। दूसरा- कान छेदने से ज्योतिषानुसार राहु और केतु के बुरे प्रभाव बंद हो जाते हैं। तीसरा इसे एक्यूपंक्चर होता जिससे मस्तिष्क तक जाने वाली नसों में रक्त का प्रवाह ठीक होने लगता है। चौथा इससे श्रवण शक्ति बढ़ती है और कई रोगों की रोकथाम हो जाती है। पांचवां इससे यौन इंद्रियां पुष्ट होती है।

10. यज्ञोपवीत : यज्ञोपवित को उपनय या जनेऊ संस्कार भी कहते हैं। प्रत्येक हिन्दू को यह संस्कार करना चाहिए। उप यानी पास और नयन यानी ले जाना। गुरु के पास ले जाने का अर्थ है उपनयन संस्कार। आज भी यह परंपरा है। जनेऊ यानि यज्ञोपवित में तीन सूत्र होते हैं। ये तीन देवता- ब्रह्मा, विष्णु, महेश के प्रतीक हैं। इस संस्कार से शिशु को बल, ऊर्जा और तेज प्राप्त होता है। साथ ही उसमें आध्यात्मिक भाव जागृत होता है।

11. वेदारंभ : इसके अंतर्गत व्यक्ति को वेदों का ज्ञान दिया जाता है।

12. केशांत : केशांत का अर्थ है बालों का अंत करना, उन्हें समाप्त करना। विद्या अध्ययन से पूर्व भी केशांत या कहें कि मुंडल किया जाता है। शिक्षा प्राप्ति के पहले शुद्धि जरूरी है, ताकि मस्तिष्क ठीक दिशा में काम करें। प्राचीनकाल में गुरुकुल से शिक्षा प्राप्ति के बाद भी केशांत संस्कार किया जाता था।

13. समावर्तन : समावर्तन संस्कार अर्थ है फिर से लौटना। आश्रम या गुरुकुल से शिक्षा प्राप्ति के बाद व्यक्ति को फिर से समाज में लाने के लिए यह संस्कार किया जाता था। इसका आशय है ब्रह्मचारी व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक रूप से जीवन के संघर्षों के लिए तैयार किया जाना।

14. विवाह : उचित उम्र में विवाह करना जरूरी है। विवाह संस्कार सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है। इसके अंतर्गत वर और वधू दोनों साथ रहकर धर्म के पालन का संकल्प लेते हुए विवाह करते हैं। विवाह के द्वारा सृष्टि के विकास में योगदान ही नहीं दिया जाता बल्कि व्यक्ति के आ ध्यात्मिक और मानसिक विकास के लिए भी यह जरूरी है। इसी संस्कार से व्यक्ति पितृऋण से भी मुक्त होता है।

15. आवसश्याधाम
16. श्रोताधाम

इस प्रकार हिन्दू धर्म के सोलह संस्कार किए जाते हैं। : अंत्येष्टि संस्कार इसका अर्थ है अंतिम संस्कार। शास्त्रों के अनुसार इंसान की मृत्यु यानि देह त्याग के बाद मृत शरीर अग्नि को समर्पित किया जाता है। आज भी शवयात्रा के आगे घर से अग्नि जलाकर ले जाई जाती है। इसी से चिता जलाई जाती है।

हिन्दू किसे कहते हैं? और हिन्दुस्तान 'इण्डिया' कैसे हुआ?

भाषाविदों का मानना है कि हिंद–आर्य भाषाओं की 'स' ध्वनि ईरानी भाषाओं की 'ह' ध्वनि में बदल जाती है। आज भी भारत के कई इलाकों में 'स' को 'ह' उच्चारित किया जाता है। इसलिए सप्त सिंधु अवेस्तन भाषा (पारसियों की भाषा) में जाकर हम हिंदू में परिवर्तित हो गया। इसी कारण ईरानियों ने सिंधु नदी के पूर्व में रहने वालों को हिंदू नाम दिया। किंतु पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लोगों को आज भी सिंधू या सिंधी कहा जाता है।

'हिन्दू' शब्द जातिवाचक न होकर स्थानवाचक और बहुत ही प्राचीन शब्द हैं। प्राचीन तथ्य है कि हिन्द महासागर के पूर्वी सिरे पर बसे भारत देश को अपनी मातृ एवम् पितृ भूमि मानने वाला व्यक्ति 'हिन्दू' हैं। धार्मिक मान्याताओं के अनुसार वेद–पाठ करने वाला, उत्तम आचरण युक्त, देवी–देवताओं का पूजन करने वाला हिन्दू की श्रेणी में आता हैं। हिन्दुस्तान का मूल निवासी चाहे वह किसी जाति या धर्म का हो 'हिन्दू' कहा जा सकता हैं।

श्रद्धा और विश्वास का देश हिन्दुस्तान हैं? क्यों करते हैं इतना अधिक विश्वास?

क्योंकि श्रद्धा विश्वास के बिना कोई कार्य परिपूर्ण नहीं हो सकता । जो व्यक्ति विश्वास करने योग्य न हो तो भी विश्वास करना पड़ता हैं। संसार के प्रत्येक कार्य में विश्वास की अति आवश्यक होती हैं। मान लो आप पूजा करने के लिए मन्दिर में जा रहे हैं। यदि मन्दिर की मूर्तियों के प्रति (जिन्हें हम देवी–देवताओं मानते हैं) श्रद्धा और विश्वास नहीं है तो आपका पूजा करने जाना व्यर्थ हैं। मन्दिर का निर्माण ही इसीलिए हुआ है कि लोगों के मन में ईश्वर के प्रति आस्था उत्पन्न हो। नास्तिक भी एक भी बार मन्दिर में प्रविष्ट हो जाये तो उसका भी मन शान्त हो जाता हैं लोगों की निष्ठा और भावना ही प्रधान होती हैं औ उन्हें देखकर नास्तिक के मन में यह विचार अवश्य उत्पन्न होगा कि यह भगवान का घर हैं। एक दूसरे पर विश्वास करने के पीछे हिन्दू लोगों के विचार

यह होता हैं कि प्रत्येक प्राणी के अन्तः करण में ईश्वर का निवास होता हैं। वह प्राणी, वह मनुष्य चाहे सद्बुद्धि वाला पुण्यवान हो या पापी। उदाहरण के लिए एक व्यवसायी के पास एक चोर आया और बोला सेठ जी! मुझे अपने पास नौकरी पर रख लो। व्यवसायी ने उसके चेहरे की ओर देखा, उसे जानता भी था कि यह चोर है फिर भी मुस्कराकर बोला ठीक है, तुम कल से नौकरी पर आ जाना। वह चोर उस दिन अपने घर चला गया और मन ही मन विचार करता जा रहा था कि अभ तो मेरी चाँदी कटेगी, जब भी मौका मिलेगा अपने पसंद की चीज चुरा लूँगा। भला इतने बड़े व्यापार में थोड़े बहुत की चोरी उसे कैसे मालूम होगी? लेकिन दूसरे दिन काम पर पहुँचते ही सेठ बोला – देख भाई! देखने में तो तुम बहुत शरीफ लगते हो, हमारे यहाँ ईमानदारी को ही प्राथमिकता भी दोगे। उस लड़के ने हाँ में सिर हिलाया। बस फिर क्या था? सेठ ने कहा–तुम मेरी गद्दी पर बैठकर काम काज संभालों , मै किसी जरुरी काम से बाहर जा रहा हूँ। यह सुनते ही वह लड़का मन ही मन बहुत खुश हुआ। सेठ के जाने के बाद उसने गल्ले की तरफ हाथ बढ़ाया, उसी समय उसके मन में ईश्वर की प्रेरणा से विचार उभरा कि अगर मेरी ईमानदारी पर सेठ सब कुछ छोड़कर गया है तो मै चोरी कैसे करूँ? यह होता है ह्रदय परिवर्तन। इसीलिये हिन्दू लोग आँखे बंद करके दूसरों पर विश्वास करते हैं।

सिक्ख किसे कहते हैं?

जो गुरुमुख से 'सीख'(शिक्षा, उपदेश) लेकर हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए युद्ध भूमि में कूदे वे सिक्ख कहलाये। जब मुसलमान शासकों ने हिन्दुओं पर अत्याचार करना आरम्भ किया तब धर्म रक्षा के लिए 'सिहं अर्थात् शेर' की भाँति पंच ककार(कड़ा, केश, कंघा, कच्छ, कटार)धारण कर शत्रुओं का नाश करने के लिए चल पड़ा। इन व्यक्तियों में जो प्रमुख कूदे वे 'सरदार' कहे गये। प्राचीन काल में प्रत्येक हिन्दू का पाँचवां पुत्र गुरुद्वारे को अर्पित किया जाता

था। दशमेश पिता श्री गुरु गोविन्द सिंह जी हिन्दू धर्म के रक्षक और सिरमौर कहे गये। उन्होंने अपने दशम ग्रन्थ में सिंह गर्जना की –

"**सकल जगत में खालसा पंथ गाजे।**

जगे धर्म हिन्दू भंड भाजे।।"

धार्मिक आस्थाओं में अंको का अर्थ

एक का क्या अर्थ हैं?

ईश्वर एक हैं।

दो का क्या अर्थ हैं?

ईश्वर और जीव के मिलने से सृष्टि बनी।

तीन का अर्थ –

तीन लोक माने गये हैं – स्वर्ग लोग, मृत्यु लोक, पाताल लोक।

चार का धार्मिक दृष्टि में क्या अर्थ हैं?

वेद चार हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

पाँच का अर्थ –

तत्व पाँच होते हैं – क्षिति(पृथ्वी), जल, पावक(अग्नि), गगन(आकाश), समीर(वायु)।

छः का क्या तात्पर्य हैं?

छः का अर्थ ऋतुओं से होता हैं। एक वर्ष में छः ऋतुएँ होती हैं – बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशर।

सात अंक का तात्पर्य किससे हैं?

सात सुरों से हैं – सा, रे, ग, म, प, ध, नी तथा वैज्ञानिक दृष्टि में से सूर्य की किरणों में सात रंग होते हैं।

आठ का अर्थ ?

एक दिन और एक रात में आठ पहर होते हैं।

नौ का क्या अर्थ हैं?

नौ का अर्थ 'नवधा–भक्ति' से लिया गया हैं।

दस का तात्पर्य क्या हैं?

दिशाओं से दस अंक का संबंध है। दिशाएं दस होती हैं – पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, आकाश, पाताल, नैऋत्य, वायव्य, ईशान, आग्नेय। इनके अलावा दिग्पाल भी दस होते हैं। जिसके नाम इस प्रकार हैं – इन्द्र, यम, कुबेर, वरूण, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, अग्नि, नैऋत्य और पवन।

धार्मिक आख्यानों के अनुसार चतुर्थी तिथि को चन्द्र दर्शन नहीं करना चाहिए। कारण स्पष्ट करें।

चतुर्थी तिथि को ही भगवान श्री कृष्ण पर 'स्यमन्तक–मणि' की चोरी करने का कलंक लगा था। एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार चन्द्रमा को अपनी सुन्दरता का अभिमान हो गया था और उन्होंने शंकर सुवन गजबदन, प्रथम पूज्य गणेश जी का उपहास किया। क्रोधित होकर गणेश जी ने चन्द्रमा को श्रामप दे दिया – जाओं तुम काले–कलूटे हो जाओं। श्राप सुनकर चन्द्रमा भय

से थर–थर काँपने लगे। उस दिन भाद्रपद मास की चतुर्थी तिथि थी। चन्द्रमा ने गणेश जी के चरणों को पकड़ लिया और क्षमा याचना करने लगें। उनकी क्षमा याचना से द्रवीभूत होकर गणेश जी बोले– अब से तुम सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हो जाओगे, तथा महीने में एक दिन के लिए पूर्णता प्राप्त करोगे। मेरा श्राप केवल भाद्रपद की चतुर्थी को विशेष प्रभावी रहेगा। बाकी चतुर्थियों को इसका अधिक प्रभाव नहीं होगा। इस दिन जो मेरा पूजन करेगा, उसका मिथ्या कलंक मिट जायेगा।

वैज्ञानिक कारण – सूर्य– चन्द्र की गणना के अनुसार चतुर्थी तिथि के दिन चन्द्रमा ऐसे त्रिकोण पर स्थित होता हैं जहाँ से सूर्य की 'मृत्युपरक किरणें' (विषैली) ही चन्द्रमा पर पड़ती हैं। वैज्ञानिक तथ्यों से यह सिद्ध हो चुका हैं कि चन्द्रमा स्वतः प्रकाशमान नही होता। सूर्य का वही मृत्युपरक प्रकाश चतुर्थी को चन्द्रमा द्वारा पृथ्वी की ओर आता हैं। इस कारण चतुर्थी को चन्द्रमा नहीं देखना चाहिए।

मनुष्य को मांस खाना चाहिए अथवा नहीं खाना चाहिए?

मनुष्य के पास न तो मासांहारी दाँत हैं और न ही आँत। कहने का तात्पर्य यह कि मनुष्य जाति प्राकृतिक रूप से शाकाहारी हैं किन्तु अपनी जीभ का स्वाद बदलने के लिए लोग मांसाहारी व्यंजन खाते हैं। वस्तुतः जो जीभ से चिपकाकर पानी पीने वाले जीव हैं, वास्तव में मांस का भोजन उनके लिए हैं। प्रकृति ने मांस नोचने के लिए उन्हें नुकीले दाँत और मांस को पचाने के लिए आंत प्रदान किये हैं। मनुष्य के शरीर में मांस को पचाने के लिए 30 दिन का समय लगता हैं। जैसे – कुत्ता, बिल्ली, शेर, बाघ आदि और घूँट–घूँटकर पानी पीने वाले जीव शाकाहारी होते हैं। जैसे – गाय, भैंस, बन्दर, मनुष्य आदि। मांसाहारी से जीवहत्या को प्रोत्साहन मिलता हैं जो हमारी संस्कृति, सभ्यता एवम् धर्म के अनुकूल नहीं हैं।

हिन्दुओं के हजारों तीर्थस्थल हैं किन्तु धाम केवल चार हैं। क्यों?

हिन्दू धर्म में चार वेद हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। ये चार वेद ही हिन्दू संस्कृति के आधार हैं तथा वर्ण भी चार हैं – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। चार वर्णों की जीवनचर्या का विभाजन चार भागों में हुआ हैं जिन्हें आश्रम कहते हैं – ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवम् संन्यास। पुरुषार्थ भी चार माने गये हैं – अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। दिशाएँ भी चार हैं। इन चार दिशाओं के अनुपात में 'चार धाम' हैं। पूर्व की ओर जगन्नाथ धाम, पश्चिम में द्वारिका, उत्तर में बद्रीनाथ और दक्षिण में रामेश्वरम्। ये चारों धाम चार वेदों के प्रतीक हैं– बद्रीनाथ जी यजुर्वेद के प्रतीक, रामेश्वर जी ऋग्वेद के, द्वारिकाधीश सामवेद के तथा अथर्ववेद के प्रतीक भगवान जगन्नाथ जी हैं।

आर्य समाज क्या हैं?

यह हिन्दू धर्म को उदारवादी नीति एवम् समाज सुधारक संस्था हैं। आर्य समाज का प्रादुर्भाव सन् 1875 ई. में महर्षि दयानन्द जी के जन्म के बाद हुआ। आर्य समाजी लोग स्वामी दयानन्द रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' को अपना धर्म ग्रन्थ मानते हैं।

आर्य शब्द की उत्पत्ति

आर्य समाज के लोग इसे आर्य धर्म कहते हैं, जबकि आर्य किसी जाति या धर्म का नाम न होकर इसका अर्थ सिर्फ श्रेष्ठ ही माना जाता है। अर्थात जो मन, वचन और कर्म से श्रेष्ठ है वही आर्य है। इस प्रकार आर्य धर्म का अर्थ श्रेष्ठ समाज का धर्म ही होता है। प्राचीन भारत को आर्यावर्त भी कहा जाता था जिसका तात्पर्य श्रेष्ठ जनों के निवास की भूमि था।

बौद्ध कौन कहलाये?

जिन्होंने महात्मा बुद्ध के उपदेशों को अपनाया, वे बौद्ध कहलाये।

सनातन धर्म का क्या अर्थ हैं?

जो सृष्टि एवम् ईश्वर को अनादि, अनन्त और सनातन मानते हैं। जो लोग यह मानते हैं कि उनके धर्म, शिक्षा उपदेशों और अवतारों का कोई आदि अन्त नहीं हैं वे सनातनी कहलाये। उनका धर्म किसी पैगम्बर या अवतार द्वारा संचालित नहीं हैं। भगवान शिव, विष्णु, श्री राम या कृष्ण के अवतरित होने से पहले ही सनातन धर्म विद्यमान था अर्थात् सनातन धर्म का आदि अन्त नहीं हैं।

हिन्दू धर्म में उपर्जित (कमाये हुए) किये धन के वितरण की क्या व्यवस्था निर्धारित हुई हैं?

महर्षि वेद व्यास ने 'श्री मद्भागवत पुराण' में उपार्जित धन के निम्नलिखित व्यवस्थाएं निर्धारित की हैं। सर्वप्रथम मनुष्य अपनी आय को राजांश अर्थात् आयकर चुकता करने के बाद जो धन शेष बचता हैं, उसका एक भाग यानि चौथाई हिस्सा यज्ञ, दान, पुण्य, कार्यों में व्यय करें। दूसरा भाग यश के लिए, तीसरा भाग पुनः पूँजी कमाने के लिए तथा चौथा भाग अपने गृहस्थ जीवन के लिए। इस प्रकार व्यय करने वाला व्यक्ति सदैव सुखी रहता हैं।

क्या सनातन हिन्दू धर्म में अहिन्दुओं के कल्याण की बात सोची गयी हैं?

हमारे पवित्र भारत देश में जितने ऋषि–महर्षि, ज्ञानी महात्माजन हुए उन सभी ने सारे संसार के प्रणियों को अपना कुटुम्ब मानकर ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उद्‌घोष किया। सभी के विषय में मनीषियों ने कहा हैं कि संसार के सभी प्राणी सुखी हों, शान्त और विनम्र हों।

मृतक की अस्थियों को गंगा में डालने का क्या अभिप्राय हैं?

हिन्दुओं की धार्मिक मान्यता के अनुसार अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करने से मृतक की आत्मा को शान्ति मिलती है तथा पतितपावनी मोक्षदायिनी गंगा के पवित्र जल के स्पर्श से मृतक की आत्मा के लिए स्वर्ग का द्वार खुल जाता हैं।

अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करने का क्या कोई वैज्ञानिक पक्ष भी हैं।

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह निष्कर्ष मिला है कि अस्थियों में फास्फोरस अत्याधिक मात्रा में पायी जाती हैं जो खाद के रूप में भूमि को उपजाऊ बनाने में सहायक हैं। गंगा हमारे देश की सबसे बड़ी नदी है। इसके जल से भूमि का बहुत बड़ा भाग सिंचित होता हैं। इसके जल की उर्वरा शक्ति क्षीण न हो, इस बचाव के लिए अस्थियाँ प्रवाहित करने की परम्परा वैज्ञानिक सूझ–बूझ से रखी गयी हैं।

'फूल' किसे कहते हैं?

धार्मिक परिभाषा में पचांग अस्थियों को फूल कहा जाता हैं। यह शब्द मृतक के प्रति श्रद्धा का सूचक हैं। वैज्ञानिक मतानुसार फूल के बाद ही फल आता हैं। फूल का सम्बोधन पूर्वजों के लिए और फल का सम्बोधन सन्तान के लिए हैं। इस तरह भी पूर्वजों की आस्थियों को फूल कहा जाना उचित हैं।

शरीर पर तेल की मालिश करने का क्या रहस्य हैं?

शरीर पर तेल मालिश करने से थकावट, कमजोरी और वात जनित रोगों से मुक्ति मिलती हैं। सिर में मालिश तथा पैरों की तली में तेल मालिश करना विशेष रूप से फायदेमंद हैं। शरीर में तेल मलने से त्वचा में कोमलता आती हैं। शुष्की नष्ट हो जाती हैं, दृष्टि तेज होती हैं।

तेल मर्दन ही क्यों, घी से मर्दन क्यों नही?

क्योंकि तेल मर्दन से शरीर को शक्ति प्राप्त होती हैं। तेल का भक्षण करने से शक्ति नहीं मिलती जबकि घी को भोजन रूप में प्रयोग करने पर शक्ति प्राप्त होती हैं, मर्दन से नहीं।

तेल मर्दन का वैज्ञानिक आधार क्या हैं?

तेल मर्दन त्वचा के रोम छिद्रों को खोल देता है जो स्वास्थ्य के लिए अत्याधिक लाभप्रद है। सिर में नियमित तेल लगाने से बालों का गिरना, सिर दर्द, मस्तिष्क की दुर्बलता आदि स्वतः नष्ट हो जाती हैं।

क्या प्रतिदिन तेल-मर्दन करना चाहिए?

शुक्रवार को तेल मर्दन नहीं करना चाहिए। शुक्र वीर्य का स्वामी है और वीर्य ही मनुष्य का तेज हैं। तेल मर्दन करने से शुक्र का तेज हमारे वीर्य में उष्णता में वृद्धि करके हमें दुखित कर सकता हैं क्योंकि वीर्य के दूषित होने से गर्भाधान में व्यवधान उत्पन्न हो सकता हैं जो भविष्य में दुःखों का कारण हो सकता हैं। रविवार को भी तेल–मर्दन न करें क्योंकि रविवार को तेल मर्दन से ताप में वृद्धि होती हैं। रवि सौर मण्डल का सबसे तेजस्वी ग्रह है। शास्त्रों का कथन है कि रवि को तेल मर्दन से ताप, सोमवार को शारीरिक सौन्दर्य, मंगल को मृत्यु बुध को धन प्राप्ति, गुरु को हानि, शुक्र को दुख तथा शनि को सुख प्राप्त होता हैं। प्रंसग बनता है कि मंगलवार को तेल मर्दन करने से मृत्यु कैसे हो सकती हैं। यहाँ मृत्यु का अर्थ मरने से नहीं बल्कि शरीर में तरह–तरह की उत्पन्न होने वाली बीमारियों से हैं जो घातक सिद्ध होती हैं। मंगल को तेल मर्दन करने से मिर्गी, खुजली आदि होने की अधिक संभावना होती हैं।

बिल्ली रास्ता काट दे तो लोग वापस क्यों लौट जाते हैं?

बिल्लियों को डायन का प्रतिरूप माना गया हैं। यदि किसी के घर में दो बिल्लियाँ आपस में लड़ रही हैं तो यह जानिये कि शीघ्र ही घर में कलह उत्पन्न

होने वाला हैं। बिल्लियों का रोना घर में किसी के मरने की पूर्व सूचना देता हैं। अंमगलकारी राहू की सवारी बिल्ली हैं। कहा जाता हैं क्या तुम्हारे ऊपर राहू की दृष्टि है जो दिन प्रतिदिन सूखे जा रहे हो। तात्पर्य यह कि बिल्ली पूर्णतः अशुभ सूचक हैं।

स्नेहा अग्रवाल की लेखनी से ⇩

नवरात्रों में उपवास रखने का वैज्ञानिक कारण क्या हैं?

जिस प्रकार सनातन वैदिक धर्म की प्रत्येक कृति विज्ञानाधारित है उसी प्रकार नवरात्रि पर्व भी पूर्णतया विज्ञान पर आधारित है।हमारे पर्व,त्योहार,व्रत,उपवास,जरा,जन्म सभी ग्रह,नक्षत्र तथा ब्रम्हांड पर आधारित होता है उसी प्रकार नवरात्रि भी सीधा संबंध रखती है पृथ्वी और सूर्य से।जी हाँ, पृथ्वी एक वर्ष में सूर्य की परिक्रमा पूर्ण करती है और उस समय मे वर्ष में 4 संधिया आती है जिन्हें नवरात्रि कहा जाता है जिनमे चैत्र व शरद की संधिया मुख्य होने के कारण इन नवरात्रों को अधिक उत्साह से मनाया जाता है।मित्रो आपने कई बार अनुभव लिया होगा कि वातारवण में आए बदलाव के कारण कई प्रकार के रोग प्रसारित होते है जिन्हें प्रायः हम वाइरल रोग कहते है जिनमे सर्दी,जुकाम,डायरिया आदि आदि रोग मुख्य है जो प्रसारीत होते है।ये रोग पृथ्वी की इसी संधि के कारण प्रसारीत होते है,जब पृथ्वी का सन्धिकाल होता है तब अनेको रोगजन्य कीटाणु वातावरण में उत्पन्न होते है और उन्ही रोगों से बचने के लिए नवरात्रि में स्वच्छता,व्रत,उपवास,मन्त्रजाप,पूजा और पाठ का विधान है।

कन्यादान क्यों करते हैं?

कन्याओ को सनातन धर्म मे देवी का स्थान प्राप्त है और उनका दान करने वाले माता पिता को भी ईश्वरी सत्ता में विशेष स्थान प्राप्त होता है।परन्तु मित्रो आप सभी की भांति मेरे मन मे भी यह प्रश्न उतपन्न हुआ था कि ,क्या कन्या निर्जीव वस्तु है जो

उसे दान में दे दिया जाता है?मित्रो यह प्रश्न आपके मेरे मन मे जिज्ञासा और झोलाछाप बुद्धिजीवि वर्ग,वामपंथियों,और तथाकथित नारीवादी संगठनों के लिए वन में लगी अग्नि की भांति धर्म पर प्रहार करने का सुअवसर समान है जिसे लेकर कई जगह लंबे लंबे लेख और चर्चाएं होती है जिस से युवा पीढ़ी को दिग्भ्रमित करने का कार्य सफल होता है।

मैंने इस प्रश्न पर चिंतन किया और थोड़े ही परिश्रम करने पर मुझे इसका सुंदर व सटीक उत्तर प्राप्त हुआ।जो मैं आप सब से साझा करूँगी।

मित्रो कन्यादान सनातन धर्म के श्रेष्ठ दान कर्तव्य में से एक है।और दान पद्धति को हमे समझने की आवश्यकता है जिस से हमारे जिज्ञासाओं का शमन हो जाएगा। दान अर्थात देने की क्रिया,और सनातन धर्म मे मानव के कर्तव्यों में एक है दान और दान सर्वदा ऐसे व्यक्ति को करना उचित है जिसे संबंधित वस्तु,द्रव्य आदि की आवश्यकता हो और यही नही वह व्यक्ति दान लेने के लिए सुपात्र हो तभी उसे दान लेने का अधिकार होता है।दान एक प्रकार का उपकार होता है जो दानकर्ता का परम कर्तव्य होता है साथ ही सुपात्र व्यक्ति को करना भी उनका उत्तरदायित्व होता है।दान लेने वाला सदैव विनम्रता से कृतज्ञतापूर्वक याचक बनकर दान को ग्रहण करता है और इस क्रिया में किसी भी प्रकार का विनिमय नही होता (यहा सिद्ध होता है कि दहेज़ प्रथा का सनातन में कोई स्थान नही अधिक जानकारी के लिए मेरे पुराने आलेख में सविस्तर पढ़े)।

दान लेने वाला याचक वेद शास्त्रो का ज्ञाता हो,तपस्वी हो,सदाचरण करने वाला हो अथवा वेदमार्ग का अनुयायी हो ऐसा विधान है अर्थात यहां सिद्ध हुआ कि दान किसी भी ऐरे गैरे को नही अपितु सज्जन-सतपुरुष को ही दिया जाना उचित है ।और याचक का कर्तव्य है कि वह झुककर विनम्रतापूर्वक दान को स्वीकार करे और यथोचित रूप से देखरेख भी करे।

अब आते है दान करने योग्य वस्तुओ तथा द्रव्यादिको पर.....मित्रो कभी आपने सुना है कि फला व्यक्ति ने फला व्यक्ति को इतने कुत्ते दान में दिए अथवा बकरी ,मिट्टी पत्थर, आदि दान किये......जी नही हमने सदैव सुना है कि

भूदान,गौदान,विद्यादान,अन्नदान आदि जो कि सभी अपने आप मे कल्याणकारी है।भूमि,गौ,विद्या तथा अन्न सदैव व्यक्ति का कल्याण करते है उसी प्रकार कन्या भी दान की श्रेणी में इसलिए आती है क्यों कि वह एक कुल से जन्म लेकर दूसरे कुल में आकर उस कुल का कल्याण करने उस कुल की वंशावली का विस्तार करती है।पितरों का दायित्व निभाने में भी सहायता करती है।गृहलक्ष्मी बन कर सदैव अपने कुल का कल्याण करती है।अपने संस्कारो तथा सद्बुद्धि से कुल में यथोचित ज्ञान का भी विस्तार करती है।उसके सहयोग से ही संबंधित कुल का सर्वांगीण विकास होने में सहायता होती है।

इस से सिद्ध होता है कि दान श्रेष्ठ का और श्रेष्ठ को ही होता है निकृष्ठ वस्तु अथवा द्रव्य का दान नही होता।यह दूरदर्शिता व सम्मान प्राप्त कराने वाली प्रथा सनातन धर्म की देन है।गर्व है मुझे आर्यधर्मी होने का। (स्नेहा अग्रवाल की लेखनी से)

ऋतुस्राव में महिलाओं को कार्य क्यों नही करने चाहिए?

महिलाओं के ऋतुकाल में होने वाले ऋतुस्राव के कारण महिला का शरीर निस्तेज, अशक्त हो जाता है और कई प्रकार की पीड़ा व थकान का सामना महिलाओ को करना पड़ता है।और चिकित्सा विज्ञान के अनुसार महिलाओं को इस काल मे विश्राम व स्वच्छता के साथ पोष्टिक भोजन लेने की आवश्यकता होती है, और मित्रो पुरुषों की भांति महिलाओ को मासिक अथवा साप्ताहिक अवकाश नही प्राप्त होता वे महीने के 30 दिन अटलता से परिश्रम करती है और उसे भी विश्राम की असवश्यक्ता होती है जो ऋतुकाल में अधिक आवश्यक होती है जिसे हमारे यहां महिलाओं की सुविधा को ध्यान में रखकर धर्म का नाम देकर और निर्मबद्धता के आधार पर इसे लागू किया गया।

महिलाओं पर पूर्वकाल से ही घर और बाहर के अनेको कार्यभार हुआ करते है आज की भांति उस समय आधुनिक सुविधाजनक संसाधन नही हुआ करते थे सभी घरेलू कार्य जैसे चक्की चलाना,चटनी पीसना,चूल्हे पर भोजन पकाना, लकड़ियां आदि लाना, कुए से जल भरना, कपड़े धोना आदि सभी कार्य कष्टदायक होते है साथ ही पूजा पाठ आदि में भी सामग्री एकत्रित करने के कार्य में घण्टो समय लग

जाता था यह कार्य भी एक प्रकार से कष्टप्रद हुआ करता था जिसमें महिला को विश्राम नही प्राप्त होता था।और साथ ही स्वच्छता के संसाधन इतने प्रबल नही थे इस कारण उसे स्पृश्य नही माना जाता था जिस से वो और अन्य व्यक्ति संक्रमण से बचे रहे।साथ ही उसे कष्टदायक समय मे घरेलू कार्य करने के लिए बद्ध ना किया जाए इस बात को ध्यान में रख कर धर्म का नाम देकर और अनेको प्रकार के भय दिखाकर इस नियम को महिलाओ के हित में समाज मे लाया गया जिस से महिलाओं जो सारे परिवार और समाज की धुरी है उसका स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है महिला देवी समान है जिसके सर्वांगीण विकास व सहजता का ध्यान सनातन धर्म ने सदैव रखा है।इसलिए विरोधी तत्वों की मूर्खता में ना बहकर तथ्यों को समझे और धर्म का सदैव सम्मान करें।। (स्नेहा अग्रवाल की लेखनी से)

मूर्ति पूजन क्यों करते हैं?

वैदिक काल मे मूर्तिपूजा का अधिक प्रचलन नही था परन्तु समय बीतने के पश्चात मूर्तिपुजा,कर्मकांड व अन्य समांतर प्रथाओं का प्रचलन बढा। इसका मुलभुत कारण क्या था इस बात पर हम आज अभ्यास करने का प्रयास करेंगे।

मित्रो प्रथम कारण तो आप सब जानते ही होंगे की,मानव मन चंचल है और उसे नियंत्रण में रखने के लिए एकाग्रता की आवश्यकता होती है, और एकाग्रता के लिए मूर्ति अथवा कोई चिन्ह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।उदाहरण के रूप में एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य की प्रतिमा को स्थापित किया और उसी से प्रेरित होकर अपनी शिक्षा स्वयं पूर्ण की, तो यह हुआ प्रथम कारण मूर्तिपूजा का।

अब हम एक अदृश्य कारण पर प्रकाश डालेंगे जो सम्भवतःआप के प्रश्नों के अंधकार को शमन कर देगा।

मित्रो हम यदि देखे तो मूर्तिपुजा में मुख्यतः फल,फूल,अगरबत्ती,मधु,घी,दही,दूध,गुड़,रोली,मोली,रुई,गोबर कंडे,वस्त्र,मिष्ठान,मिट्टी के बर्तन,इत्र आदि का प्रयोग किया जाता है, जो गाव के निर्धन परिवार के अनेको ज्ञातियो के लोगो द्वारा उपलब्ध करवाया जाता है, उस समय की व्यवस्था वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित थी जो कि गुरूकल से जन्मी थी, और यह व्यवस्था सभी को रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए पर्याप्त थी।

पूजन सामग्री उपलब्ध करवाने वाले स्त्री,पुरुष व वृद्ध सभी जन आत्मनिर्भर थे और सभी अपने स्थान पर स्वयमरोजगार पर जीवन जीते थे।

मूर्तिपूजा से एकाग्रता के साथ साथ गाव की अर्थव्यवस्था को स्वावलंबन प्राप्त हुआ करता था।
यह एक तर्कसंगत सामाजिक विषय हुआ करता था जिस से निर्धन और बेरोजगार लोगो को रोजगार प्राप्त होने में सहायता प्राप्त हो जाती थी।
ये लोग भिक्षा मांगकर नही अपितु आपको पूजन सामग्री उपलब्ध करवाकर अपना उदरनिर्वाह किया करते थे। जिस से अर्थव्यवस्था व समाज व्यवस्था मे संतुलन बना रहने में महत्वपूर्ण योगदान इस प्रथा द्वारा प्राप्त हुआ करता था। (स्नेहा अग्रवाल की लेखनी से)

क्रोध क्या है? क्रोध क्यों आता हैं?

मित्रो आप सभी ने क्रोध की अग्नि के विषय मे सुना होगा।क्रोध की अग्नि सब कुछ नष्ट कर देती है यहा तक कि संबंधों को भी भस्म कर देती है।मित्रो क्रोध को अग्नि की संज्ञा दी गई है।अग्नि को पवित्र है पावक है देवताओं के समान पूजनीय है और यदि अग्नि पूजनीय व पोषक है तो क्रोधाग्नि केवल घातक और विनाशकारी कैसे सिद्ध हुई?

अग्नि वन में प्रवेश कर जाए तो सारे वन का सर्वनाश कर देती है और वही अग्नि चूल्हे में प्रवेश कर जाती है तो अन्न पकाने में सहायक सिद्ध होकर सभी प्राणिमात्रो का उदर भरण करने वाले देवता सदृश सिद्ध होती है......स्पष्ट है मित्रो,अग्नि ऊर्जा है और ऊर्जा का आप जैसे प्रयोग करेंगे वैसा ही फलदायक सिद्ध होगी चाहे सकारात्मक हो चाहे नकारात्मक। उसी प्रकार क्रोध की अग्नि को भी यदि आप उचित स्थान पर प्रयोग करेंगे तो सर्वहितकारी सिद्ध होगी।
उदाहरण के रूप में लीजिए यदि क्षत्रिय को क्रोध नही आएगा तो वह रणक्षेत्र में विजय प्राप्त करना दूर की बात है आत्मरक्षण भी नही कर पाएगा।

श्री कृष्ण को क्रोध आया तभी उन्होंने कालिया,कंस,शिशुपाल आदि का वध किया और समाज का कल्याण किया,शिवजी को क्रोध आया तभी उन्होने तारकासुर,और अन्य राक्षसों का वध किया।जगतजननी माँ जगदम्बा को क्रोध आया तभी उन्होंने महिषासुर, मधु–कैटब, शुम्भ–निशुम्भ आदि भयंकर राक्षसों का वध कर सुर और

मानव समाज की रक्षा करी।
अर्थ स्पष्ट है मित्रो,जिस प्रकार सर्पदंश के तोड़ के स्वरूप में सर्प का ही विष औषधि का कार्य कर मरणासन्न पीड़ित को पीड़ा से मुक्ति दिलाकर जीवनदान प्रदान करता है उसी प्रकार तामस क्रोध पर सात्विक क्रोध विजय प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होता है ।असत्य पर सत्य और अन्याय पर न्याय का साम्राज्य स्थापित करने में सहयोग करता है।

क्रोध यदि संतुलित हो और उचित स्थान पर हो तो औषधि है जैसे बालको को पर माता पिता और कनिष्ठों पर वरिष्ठ क्रोध ना करे गुर शिष्य पर क्रोध न करे तो समाज मे अनुशासनहीनता का साम्रज्य स्थापित हो जाएगा।इसीलिए क्रोध को अग्नि की संज्ञा दी गई है जिस स्थिति में जिस प्रकार और जिस संदर्भ में आप उसे उपयोग में लाएंगे वैसा ही फल प्राप्त करेंगे।। (स्नेहा अग्रवाल की लेखनी से)

सनातन धर्म में स्त्री का स्थान क्या हैं?

जब परमपिता ब्रम्हदेव ने पृथ्वी की स्थापना की थी और उसी उपलक्ष में पृथ्वी पर यज्ञ का आयोजन करवाया था और इस यज्ञ में गृहस्थ ब्रम्हा जी को सपत्नी विराजना था परन्तु माता सावित्री को आने में विलंब हुआ और शुभ मुहूर्त के बीत जाने के भय से ब्रम्हा जी ने उपाय खोज निकाला और गौ माता के मुख से गायत्री को उत्पन्न कर उनसे विवाह कर पत्नी रूप में उन्हें वामांग में स्थान देकर सभी विधियों को पूर्ण किया।
जब सावित्री वहां उपस्थित हुई और सभी वृत्तांत को विस्तार से जाना तो क्रोधवश और शोकग्रस्त हृदय से उन्होंने ब्रम्हा जी सहित नारद, अग्नि, गौ तथा ब्राम्हण को श्राप दे दिया और उसी श्राप के कारण ब्रम्हा जी को पृथ्वी पर पूजना निषिद्ध है।

इसी के विपरीत ऐसी ही स्थिति श्री राम के साथ उतपन्न हुई जब माता सीता रावण के पास में थी और श्री राम ने रामेश्वरम लिंग की स्थापना का अनुष्ठान करवाना था और आचार्य के रूप में स्वयं शत्रु होकर भी रावण अवस्थित था, और रावण द्वारा पत्नी को वामभाग में आसीन करने के निर्देष पर श्री राम ने तनिक भी विचलित ना होते हुए और एकपत्नीव्रत धर्म का पालन करते हुए किसी अन्य स्त्री को वामांग में स्थान ना देकर माँ सीता की मूर्तरूप में एक आभूषण व चुनरी रखकर अनुष्ठान को सम्पन्न किया, और श्री राम के करकमलों से समुद्र की आर्द रेणुकाओ से ज्योतिर्लिंग

की स्थापना हुई।
रावण ने श्री राम की इस सूझबूझ और वचनबद्धता को देखकर प्रसन्न होकर विजयी होने का आशीर्वाद प्रदान किया।

तो मित्रो,दोनों ही प्रसंगों में हमने देखा की पत्नी का भूलवश ही तिरस्कार अथवा हृदयाघात करने वाली व्यक्ति चाहे सृष्टि की रचियता क्यों ना हो वह पूजनीय नही कहलाता । इसके विपरीत पत्नी के अनुपस्थिति में भी जो पत्नीव्रत धर्म पर अटल हो और सदैव पत्नी का सम्मान करें वह अजेय शत्रु सेना पर भी सहजता से विजय प्राप्त कर लेने में सक्षम होता है।और वही व्यक्ति "मर्यादापुरुषोत्तम" कहलाता है। (स्नेहा अग्रवाल की लेखनी से)

सर पर पल्ला रखना और घूंघट प्रथा के पीछे का रहस्य क्या हैं?

आज भी भारत के अनेक गावो में और बहुत से सनातन धर्मी कुटुंबो में इस प्रथा का पालन बड़े आदर सम्मान के साथ किया जाता है।कई घरों की महिलाएं,माता बहने और बहू बेटिया अपना सर साड़ी के पल्ले या चुन्नी से ढंक कर रखा करती है, ये आदरसूचक कृत्य माना जाता है जो बड़ो के सम्मान में किया जाता है ,धार्मिक कृत्यों में भी इसका बड़ा महत्व है। परन्तु इस प्रथा को कुछ बुद्धिजीवी बंधनकारक,प्रगति में बाधक और महिलाओं पर बोझ समझ कर खुले मुह से उसका विरोध करते है और तो और प्रसार माध्यमो जैसे टीवी सीरियल आदि में भी इस का त्याग करने की दलीले दी जाती है।

परन्तु मित्रो ये विरोध केवल और केवल अज्ञानता और अभ्यास के अभाव का परिणाम है जो हमने कभी किया ही नही।मैं समय समय पर लिखती आई हूं कि सनातन धर्म मे पालन की जाने वाली हर परम्परा के पीछे शुद्ध विज्ञान जुड़ा हुआ होता है जो या तो प्रकृति या मानव स्वास्थ्य से जुड़ा होता है।जी हां, इस प्रथा के पीछे भी ऐसा ही विज्ञान जुड़ा है जिसे मैं बताने जा रही हु।

सब से पहले तो ये मिथक तोड़ना चाहूंगी कि केवल महिलाओ के लिए सर ढंकना अनिवार्य था.....जी हां ये केवल मिथ्या है यदि आप पारंपरिक भारत का अध्ययन करेगे तो पाएंगे कि हर वर्ग की हर वर्ण की स्त्री ही नही अपितु पुरूष भी सर पर

टोपी, पगड़ी रखा करते थे।यदि सम्पन्न और राजकुटुम्ब से है तो भी मुकुट सर पर शोभायमान होता ही था।तो ये प्रथा नारिविरुद्ध होने का प्रश्न ही समाप्त होता है।

अब बात करती हूं इस प्रथा के कारण की,

मित्रो हमारा सर सब से संवेदनशील और नाजुक अंगों में एक है,बालक जब जन्म लेता है तब वह भाग अत्यंत कोमल होता है जो समय के अनुसार कठोर होता है जब मस्तिष्क का पूर्ण विकास हो जाता है।परन्तु फिर भी संवेदनशीलता के कारण इस भाग को ढंक कर रखा जाए तो कई रोगों से बचा जा सकता है।कानो के ढंका रहने से गर्म ठंडी हवाओं के दुष्प्रभाव से बचकर कई रोगों से सुरक्षा प्राप्त होति है। सर के इस हिस्से में ब्रम्हरंध्र स्थित होता है जिस से आकाशीय विद्युत तरंगे सीधा प्रभाव डालती है जिस से नेत्र रोग,क्रोध,पीड़ा व अवसाद होने की संभावना अधिक हो जाती है साथ ही केशो संबंधी सौंदर्य समस्या होने का भय भी होता है।साथ ही केश खुले रहने के कारण केशो में चिपक कर कई प्रकार के विषाणु ,जीवाणु हमारे शरीर मे प्रवेश कर जाते है जिस से कई रोग बिना बुलाए घर आ जाते है जिन सब से सर के ढंके हुए रहने से बचा जा सकता है।
ये हुआ वैज्ञानिक विश्लेषन....

अब अध्यात्म से यदि जोड़ा जाए तो ब्रम्हरंध्र सर के कठोर होने के साथ बन्द हो जाता है जिसे खोलने के लिए ध्यान अध्यात्म की आवश्यकता पड़ती है और कई महात्मन इसी प्रयास में जीवन बिता देते है।।और ब्रम्हरंध्र और शरीर के दशम द्वार को खोलने के लिए अभ्यास और ध्यान की आवश्यकता पड़ती है जिसे चंचल मन पर वश कर के कर पाना सम्भव है।।और मन की चंचलता को स्थिरता प्रदान करने में सर के ढंका होंने की महत्वपूर्ण भूमिका है।पूजा के समय भी ध्यानर्जन के लिए सर पर पल्लू या टोपी रखने का नियम है।।

अब बात होती है घूंघट प्रथा की तो सनातन के किसी ग्रंथ में ऐसा उल्लेख नही मिलता की चेहरा ढंका हुआ होना चाहिए। यह प्रथा नीच बलात्कारी मुग़ल आक्रमणकारियों के भय से मा पद्मिनी के जोहर के पश्चात भूखे भेडियो की कुदृष्टि से अपनी सुंदरता को छिपा कर रखने व अपने शील मर्यादा की रक्षा करने हेतु महिलाओं द्वारा किया गया उपाय मात्र था।यह सनातन भारत की देन नही है।

सर ढंकना और घूंघट निकालना इनमे अंतर है ।

सर ढंकने के पीछे वैज्ञानिक,सामाजिक व आध्यात्मिक सभी प्रकार के हित निहित है जिसे श्रद्धा से पालन करे ।। (स्नेहा अग्रवाल की लेखनी से)

मुंडन क्यो करवाते हैं?

इससे पूर्व की मैं आपको इस विषय पर बताऊ उसके पूर्व बता दु की संस्कार का अर्थ क्या है.....संस्कार का शब्दशः अर्थ है विकारों को दूर करना और किसी भी व्यक्ति,वस्तु आदि से विकार को दूर कर उसे शुद्ध करने की क्रिया को संस्कार कहते है।मानव जीवन को ध्यान में रखकर महर्षि गौतम ने 48 तथा महर्षि व्यास जी ने 16 संस्कारो का वर्णन किया है।इन्ही संस्कारो से युक्त व्यक्ति स्वयम को पुरुषार्थचतुष्टय साधन का अधिकारी बना सकता है।संस्कारो से ही भारतीय संस्कृति व सभ्यता पल्लवित,विकसित और प्रकाशित होती आई है।।

अब आरम्भ करती हूं चूड़ामन अर्थात मुंडन संस्कार से....

मित्रो सदा से बताती आई हूं कि प्रत्येक संस्कार व विधि तथा परम्परा के पीछे विज्ञान होता है इसी प्रकार इस क्रिया के पीछे भी विज्ञान छिपा हुआ है जिसका बखान आयुर्वेदाचार्य महर्षि चरक भी करते है। मुंडन संस्कार में बालक के जन्म के पश्चात प्रथम तथा तृतीय वर्ष में उसके सिर के केशो को मूंड देने का विधान है और उसे शिखा प्रदान की जाती है।जिस से कहते है कि बालक मेधावी होता है स्वस्थ होता है और मान्यता है कि पुर्व जनम की स्मृतियों से मुक्ति मिल जाती है।

तो मित्रो शरीर विज्ञान क्या कहता है ये जानते है।

बालक के जन्म से लेकर तृतीय वर्ष उसके दांत निकलने का समय होता है और इस अवधि में बालक के केश झड़ना,दस्त लगना,तापमान बढना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है और इस समस्या से मुक्ति पाने के लिए स्वास्थवर्धक दृष्टि से मुंडन संस्कार का विधान किया गया है।और दूसरा कारण यह है कि जब बालक का जन्म होता है और बालक गर्भ से बाहर आता है तब उसके शरीर तथा केश में भयानक कीटाणु तथा रोगजन्य बेक्टेरिया आदि भी आ जाते है जिनसे साधारण स्नान से मुक्ति पाना सम्भव नही है इसलिए उन केशो को मूंड दिया जाने का विधान होता है जिस से बालक के स्वास्थ्य को नुकसान न पहुँचे।

केश शरीर का ऐसा भाग है जो मस्तिष्क से जुड़ा होता है और साथ ही बाहरी वातावरण के साथ जुड़ा होता है और उसी के साथ धूल मिट्टी के कणों के साथ कई रोगजन्य कीटाणुओं संचार करता है और उन से मुक्ति पाने के लिए सिर से स्नान या फिर मुंडन का विधान होता है।

इसी प्रकार मृतक के परिजनों और श्मशान भूमि में जाने वालों के लिए भी केशदान का विधान शास्त्रो में किया गया है।इसके पीछे भी विज्ञान है।जब शरीर शव में परिवर्तित हो जाता है तब भयंकर रोगजन्य कीटाणु आदि उस शरीर मे प्रवेश कर लेते है और उस शव के अधिक संपर्क में आने वाले लोगो पर भी प्रभाव डाल कर उन्हें रोगी बनाने में सक्षम होते है इसी प्रकार शमशान भूमि में अनेको रोगों से व्याधियों से मृत्यु पाने वाले शवो का दाह किया जाता है जिस से शमशान भूमि में ऐसे कीटाणुओं की उपस्थिति होती है जो शमशान में आने वालों के शरीर पर चिपक कर आ जाते है जिनसे साधारण स्नान से मुक्त होना सम्भव नही होता है और उनसे मुक्ति पाने के लिए केश दान का विधान किया गया है।निकटतम परिजनो को अनिवार्य है और अन्य जनों को ऐच्छिक है केशदान का विधान।

तो मित्रो ये है मुंडन और केशदान संस्कार का वैज्ञानिक आधार।तो बिना समझे किसी भी सनस्कर व क्रिया को अंधविश्वास व आधारहीन कहने से पूर्व एक प्रश्न ग्रंथो से अवश्य करे ये आपको सनातन व प्राचीन विज्ञान से परिचित करवा कर आपके ज्ञान व विश्वास में वृद्धि करेगा।।

सोचे,समझे ततपश्चात ही अवलम्ब करे यही सनातन धर्म की शिक्षा है।। (स्नेहा अग्रवाल की लेखनी से)

दहेज प्रथा क्या हैं?

दहेज़ लेना और देना एक सामाजिक कुप्रथा ही है जिस प्रथा के कारण समाज में महिलाओं पर अत्याचार,उसके परिजनों को अपमानित करना,शोषण करना ,माता पिता द्वारा विवाह के लिए ऋण लेना यहां तक कि इस लोभ की अग्नि में कई महिलाओं के हत्या कर दिए जाने की घटनाओं तक का इस प्रथा का स्वरूप बदल गया है।इस प्रकार की मुहमांगी मांग कर कन्या के परिवारजनों को अपमानित कर

कन्या के हृदय पर शुलाघात करना ऐसी उग्र स्वरूप की सामाजिक टीस बनकर यह प्रथा रह गई है।

परन्तु मित्रो आज प्राणघातक व भयावह निंदनीय दिखने वाली इस प्रथा का स्वरूप क्या प्राचीन काल से ऐसा ही था?क्या इतिहास में भी ऐसी ही घटनाएं हुआ करती थी??

आज इसी बात पर लेख लिखकर कुछ मिथकों को तोड़ने का प्रयास कर रही हु।

मित्रो,आरम्भ करती हूं एक प्रसंग से जब श्री राम और माता सीता का विवाह हो रहा था और राजा दशरथ तथा राजा जनक आपस मे संबंधी के स्वरूप में भेंट कर रहे थे...राजा दशरथ आकर जनकजी के चरणों मे नमन करते है और दंडवत प्रणाम करते है,यह देख राजा जनक चकित हो जाते है और प्रेमपूर्वक व कौतूहलवश उनसे ऐसा करने का कारण पूछते है।तब राजा दशरथ कहते है कि हे राजन,आप मुझे अपनी कन्याओ को दान स्वरूप दे रहे है आप दाता है मैं याचक हु।आप उपकार कर रहे है मुझ पर की आप अपनी कन्याए मुझे दान स्वरूप दे रहे है।और हे राजन दाता के समक्ष याचक का सर झुका हुआ होना चाहिए और इसी लिए मैं आपको नमन कर रहा हु।

इस प्रसंग में कन्या का दान श्रेष्ठ बताया गया है और कन्या देने वाला दाता दानकर्ता उच्च कोटि का स्थान प्राप्त करता है। दान सदा ऐच्छिक होता है दान मुह से मांगा नही जाता।दानकर्ता स्वेच्छा से जो दे उसे ग्रहण करना दान लेने वाले का कर्तव्य होता है।यह सनातन धर्म की शिक्षा है।

पूर्वकाल मे कन्यादान करने वाले माता पिता प्रेमवश कन्या को विवाह में कन्या की आवश्यकताओं की सामग्री प्रदान करते थे जिस से कन्या को ससुराल में प्रवेश करते ही कुछ मांगना ना पड़े और ससुराल पक्ष के लोग भी उसकी पसन्द नापसंद समझ पाए उस प्रकार का नियोजन होता था।कन्या के साथ मे गौ,बछड़ा या उसकी कोई प्रिय दासी उसके साथ भेज दी जाती थी जिस से उसे नए घर नए लोगो के बीच असहज और अपरिचित लोगो के बीच रहने का अधिक आभास ना हो।साथ ही ससुराल वालों को भेंट स्वरूप कुछ वस्तुए प्रेमस्वरूप ऐच्छिक रूप से कन्यापक्ष

द्वारा भेंट की जाती थी। इसमे स्वाभिमान,ममत्व और सहजता का शुद्ध भाव था ना की मांग कर नियमबद्धता से किसी का शोषण करने का भाव था।

भारतवर्ष में सनातन धर्म मे 'दान'प्रथा अस्तित्व में थी न कि दहेज प्रथा।मैंने कई पुस्तकें पढ़ी,ग्रंथ पढ़े परन्तु दहेज़ शब्द मुझे नही प्राप्त हुआ।यह शब्द ही सनातन सभ्यता में नही है तो मित्रो यह प्रथा कब और कैसे अस्तित्व में आई,और कैसे लोग अपनी कन्यारत्न के साथ वरपक्ष द्वारा मुहमांगी धन - संपत्ति देकर विदा करने लगे इसका भी हम विश्लेषण करने का प्रयास करते है।

तो मित्रो बात मध्ययुगीन काल की है जब विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा दिन दहाड़े कन्याओ को उठा कर ले जाने की घटनाएं सामान्य हो रही थी,महिलाओं,कन्याओ पर अत्याचार,अनाचार कर उनपर बलात्कार जैसी निंदनीय घटनाए प्रतिदिन हो रही थी,तब लोगो ने इस अनर्थ से बचने अपने कुल की लाज बचाने कन्याओ को जैसे तैसे विदा कर देने का उपाय खोज निकाला।इस के लिए लोगो ने कन्या की आयु तक का ध्यान करना छोड़ दिया इस कारण बाल विवाह भी होने लगे।और अवयस्क वर होने के कारण उसकी आजीविका,व्यापार व्यवसाय की व्यवस्था कर देने का भी वचन देने से लोग नही चूक रहे थे वे धन देकर भी कन्या को किसी भी तरह ससुराल पहुचाकर कन्यादान के ऋण से शीघ्रातिशीघ्र मुक्त होना चाहते थे।इसी विवशता का लाभ कुछ लोभी वरपक्षो ने लेना आरम्भ कर दिया और मनसोक्त राशि,धन,संपत्ति,जमीन आदि की मांग करने लगे।

तत्कालीन विवशता का लाभ लेने की संधिसाधुता की आदत आगे चल कर एक भयावह कुप्रथा बनकर रह गई।आज विवशता नही रही,सामाजिक व वैचारिक स्वतंत्रता आज सभी को प्राप्त है ,सभी वर्ग सुरक्षित है फिर भी हम कन्यादान नही दहेज़ देकर कन्या को विदा करने में विश्वास रख रहे है।और वरपक्ष भी राजा दशरथ की भांति सर झुकाकर दान लेने में आस्था नही रख रहे अपितु सर उठाकर मुह खोलकर मूल्यवान वस्तुओ की मांग कर कन्यापक्ष का शोषण कर रहे है।क्यों आज विवाह जैसी पवित्र संस्था को आदान-प्रदान व व्यापारिक संस्था बना देने पर तुले है हम।क्यों शोषण,अत्याचार,अपमान,हत्या, जैसे अमानवीय कृत्य कर सनातन

धर्म को मलिन कर रहे है ,क्यों नही आराध्यों को पूजने के साथ उनके सत्कर्मो व गुणों का अवलम्ब भी हम कर रहे??? सोचे,समझे अवलम्ब करे।। (स्नेहा अग्रवाल की लेखनी से)

सती प्रथा क्या हैं?

मित्रो आज का लेख एक ऐसे विषय पर लिख रही हूँ जिसे लेकर कुछ बुद्धिजीवी लोग सनातन धर्म पर समय–समय पर कुठाराघात करते आए है और सनातन धर्म को स्त्री विरोधी और अमानवीय धर्म बताने का प्रयास करते आए है, जी हां मित्रो यह विषय है 'सतीप्रथा' का जिसमे तताकथित रूप से विधवा स्त्री को पति के शव के साथ जीवित जला दिया जाता था किंतु यह कितना सत्य और कितना मिथ्या इस बात पर चिंतन करेंगे।

मित्रो सर्वप्रथम कहना चाहूंगी कि इस प्रथा का नाम सती प्रथा इस लिए पडा क्यों कि प्रजापति दक्ष की पुत्री माता सती शिव जी अर्थात अपने पति का अपमान हो जाने के कारण सभी देवताओं के समक्ष पिता के द्वारा कराए जा रहे हवन कुंड में भस्म हो गई थी और इसीलिए इस प्रथा का नाम सती प्रथा रखा गया जो कही से भी उचित और तथ्यसंगत नही लगता क्यों की पति की जीवितावस्था में पति के अपमान के कारण उन्होंने आत्मदाह किया था ना कि पति के शव के साथ। तो नामकरण ही आधारहीन हुआ।

मित्रो मैने रामायण पढ़ी,महाभारत पढ़ी,गीता पढ़ी,मनुस्मृति पढ़ी परन्ति मुझे कही भी इस प्रथा का उल्लेख नही मिला ना तो दशरथ महाराज के पश्चात माँ कौशल्या, सुमित्रा, कैकई ने सती का अवलम्ब किया ना ही महाभारत में सत्यवती और कुंती ने इसको अपनाया।अपितु वे राजमाता बन कर गौरव से जीवित रही। कुछेक मन्दबुद्धि लोग कहते है कि पांडु पत्नी माद्री सती हुई थी जबकि सत्य यह है कि माद्री ने पांडु की मृत्यु का कारण स्वयं को समझा और आत्मग्लानि और पश्चाताप के कारण वो पति के साथ आत्मदाह कर लेती है। इसे सती की संज्ञा दे दी और वही प्रेमी जोड़े आत्महत्या कर लेते है उसे क्रूर कृत्य नही बताया जाता अपितु प्रेम की मिसाल दी जाती है उनकी। वही माद्री के प्रेम को सामाजिक अमानवीय अपराध के रूप में देखते है धर्म के शत्रु।।

अब सती का वास्तविक सत्य साझा करती हूं.....

भारत के कई आदिवासी इलाको में सती प्रथा है किंतु इसका प्रकार देखे। वहां विधवा स्त्री संस्कृत में मंत्र पढ़ती हुई पति की चिता के चक्कर काटती है और हर चक्कर मे एक प्रश्न अपने हर संबंधी से करती है जैसे पुत्र,पुत्री,भाई,समाज,पुरोहित आदि और प्रश्न यह होता है कि क्या आप मेरा भरण पोषण करेगे अब मैं विधवा हुँ। यदि कोई हाँ कहता है तो प्रदक्षिणा रोक देती है किंतु नही कोई सहमत होता तब वह 7 प्रदक्षिणा कर के गाँव के मंदिर जाती है और वही ईश्वर चरण में जीवन यापन करती है और इस स्त्री को सती कहते है यही नही सारा समाज मन्दिर आता है तब उस स्त्री की भी चरण वंदना करता है और सम्मान दिया जाता है देवी मानकर।।

यह है वास्तविक सती प्रथा का सत्य।

कई लोग जोहर को सती से जोड़ते है जबकि जोहर अपनी लाज मर्यादा को आक्रमणकारी भेडियो से बचाने के लिए हुआ करते थे ना कि सनातन धर्मी लोगो ने उन्हें बाधित किया।ये मुग़ल और आंग्ल आक्रमणकारियों की बलात्कारी प्रवृत्ति का परिणाम था ना कि सत्य सनातन धर्म की देन।। (स्नेहा अग्रवाल की लेखनी से)

एक ही गोत्र में विवाह न करने का कारण

विवाह करते समय नाड़ी और गोत्र का मिलान किया जाता हैं जो वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण बात हैं। क्योंकि इसके माध्यम से यह देखा जाता हैं कि जिस स्त्री–पुरुष की शादी हो रही है उनका डी.एन.ए. एक ही न हो। एक ही डी.एन.ए. में शादी होने से या तो बच्चो नहीं होंगे या बच्चे होंगे तो बहुत कमजोर होंगे। जो बार–बार बीमार पड़ेगे या विकलांग होंगे। डी.एन.ए. एक ग्रुप हैं। इस ग्रुप में आस–पास की भी शादी नहीं होनी चाहिए। बहुत बार ऐसी सन्ताने ज्यादा दिन तक जीवित नहीं रहती हैं। इसलिए एक ही नाड़ी या एक गोत्र में शादियां नही की जाती हैं। जिनका नाड़ी और गोत्र एक ही होता हैं, ज्यादातर परिस्थितियों में उनका ब्लड ग्रुप भी एक ही होता हैं। इसलिए ऐसा करना बहुत वैज्ञानिक होता हैं। आजकल हमारे देश में प्रेम विवाह बहुत होने

लगे हैं और प्रेम विवाह में न तो नाड़ी का ध्यान रखा जाता हैं और न गोत्र का ध्यान रखा जाता हैं। जिसके कारण इस प्रकार से विवाह करने वालों को बच्चों को लेकर कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। इसलिए प्रेम विवाह परिस्थियों में भी नाड़ी और गोत्र का ध्यान रखना चाहिए।

प्रेम विवाह करना उचित हैं या नहीं?

आज कल का जो प्रेम है वह ज्यादा दिन तक टिकता–उकता नहीं हैं। क्योंकि यह जो प्रेम है वह एक खास तरह का वेग है जो शरीर में एक खास तरह के हार्मोन (डोपामाइन हार्मोन) की वजह से पैदा होता हैं और कुछ समय विशेष के बाद यह शान्त हो जाता हैं। इसमें आकर्षण होता हैं, प्रेम नहीं होता हैं। यह आकर्षण डोपामाइन हार्मोन के शान्त होते ही शान्त हो जाता हैं और उसके बाद प्रेम विवाह में वास्तविक संघर्ष की शुरुआत होती है जिसके कारण इस तरह के ज्यादातर विवाह ज्यादा दिन तक टिक नहीं पाते हैं। ऐसे प्रेम विवाह में सिर्फ विवाह बचता हैं प्रेम चला जाता हैं। इसलिये आप जीवन में कोई भी फैसला करें तो किसी आवेग में न करें। क्योंकि आवेग में किये हुए फैसले के परिणाम के गलत होने की संभावना अधिक रहती हैं। डोपामइन के असर में दोनो (प्रेमी–प्रेमिक) एक दूसरे के लिए मरने के लिए तैयार होते हैं । डोपामाइन अकेला ऐसा हार्मोन होता हैं जो ज्यादा देर टिकता नहीं हैं। डोपामाइन नाम का हार्मोन विवेक को खत्म कर देता हैं। विवेक काम नहीं करता और फैसला गलत होता है जिसको लेकर आप जिन्दगी भर पछताते हैं। प्रेम तो बहुत आवश्यक हैं जीवन को चलाने के लिए। लेकिन उममें जो आवेग हैं वही खराब होता हैं। अतः प्रेम के आवेग में कोई कार्य मत कीजिये। ऐसा आपको अपने सन्तान और समाज दोनो के लिए करना चाहिए।

सोलह श्रृंगार का क्या महत्व हैं?

भारतीय संस्कृति में विवाह का जितना महत्व हैं, उतना ही महत्व विवाह के बाद स्त्री श्रृंगार का भी हैं। भारतीय धर्म ग्रंथों में विवाहित स्त्री को बिना श्रृंगार के अधूरा माना गया हैं। सुहागिनों के लिए श्रृंगार को सुहाग का प्रतीक माना जाता हैं। हिंदू महिलाओं के 16 श्रृंगार में बिंदी, कंगन, चूड़ियाँ, सिंदूर , काजल, मेहंदी, लाल कपड़े वाली साड़ी, गजरा, पायल, बिछुआ, मांग टीका, नथ, कान के गहने, हार, बाजूबंद, अंगूठी और कमरबंद शामिल हैं। हिंदू परिवारों में प्राचीन काल से ही यह परंपरा चली आ रही हैं कि सुहागिनों को कुमकुम या सिंदूर से अपने माथे पर बिंदी जरुर लगानी चाहिए। इसको परिवार की खुशहाली का सूचक माना जाता हैं। पारिवारिक रस्मों के तहत जब बहू पहली बार पति के घर पर आती हैं तो पति की माँ यानी सास अपनी बहू को कंगन एवं चूड़ियां उपहार में भेंट करती हैं। सिंदूर की अगर बात की जाए तो सात फेरों के बाद दूल्हा जब दुल्हन की मांग भरता हैं इसे जीवन भर साथ निभाने का प्रतीक माना जाता हैं। वहीं काजल आंखों को सुन्दर बनाने के लिए होता है और माना जाता हैं कि यह बुरी नजर से भी बचाता हैं। सौभाग्य का प्रतीक मानी जाने वाली मेहंदी के बिना श्रृंगार को अधूरा माना है। मेहंदी को त्वचा के लिए भी अच्छा माना जाता हैं। दुल्हन के लिए शादी का लाल जोड़ा पहनने की लंबी परंपरा है। ऐसा माना जाता हैं कि अगर कोई विवाहित स्त्री नियमित तौर पर सुंगधित फूलों का गजरा लगाकर भगवान की पूजा करती है तो ऐसे करने से घर में लक्ष्मी का निवास होता हैं। नथ(कांटा), कान के गहने और मांग टीके का भी अपना खास महत्व हैं, इन्हें सौभाग्यवती होने का प्रतीक माना गया हैं। गले में पहना जाने वाला मंगलसूत्र पति के प्रति पत्नी की वचनबद्धता का सूचक होता हैं। विवाह के समय इस रस्म को संपन्न किया जाता हैं। बाजूबंद, कमरबंद और अंगूठी कुछ ऐसे आभूषण हैं, जो सोने या चांदी के पहने जाते हैं और जो वर–वधू के आपसी प्रेम और विश्वास को मजूबत करने के प्रतीक होते हैं। पैरों की उंगलियों में अंगूठियों की तरह पहने जाने वाले आभूषण को बिछुआ, अरसी या अंगूठा कहा जाता हैं। विवाहिताएं

अपने पैर की छोटी उंगली को छोड़कर तीनों उंगलियों में बिछुआ पहनती हैं। इसे शुभ होने का संकेत माना जाता हैं। छम–छम करती पायल भी 16 श्रृंगार एक खास हिस्सा होती हैं। पैरों में पहने जाने वाले इस आभूषण के घुंघरुओं की मनोहारी आवाज को सौभाग्य का प्रतीक माना जाता हैं। इस तरह से 16 श्रृंगार का हर एक आभूषण विवाहिता स्त्री के लिए अपना खास महत्व रखता हैं।

कान छिदवाने की परम्परा:

भारत में लगभग सभी धर्मों में कान छिदवाने की परम्परा है।

वैज्ञानिक तर्क-

दर्शनशास्त्री मानते हैं कि इससे सोचने की शक्ति बढ़ती है। जबकि डॉक्टरों का मानना है कि इससे बोली अच्छी होती है और कानों से होकर दिमाग तक जाने वाली नस का रक्त संचार नियंत्रित रहता है।

माथे पर कुमकुम/तिलक :

महिलाएं एवं पुरुष माथे पर कुमकुम या तिलक लगाते हैं

वैज्ञानिक तर्क-

आंखों के बीच में माथे तक एक नस जाती है। कुमकुम या तिलक लगाने से उस जगह की ऊर्जा बनी रहती है।

माथे पर तिलक लगाते वक्त जब अंगूठे या उंगली से प्रेशर पड़ता है, तब चेहरे की त्वचा को रक्त सप्लाई करने वाली मांसपेशी सक्रिय हो जाती है।
इससे चेहरे की कोशिकाओं तक अच्छी तरह रक्त पहुंचता !

जमीन पर बैठकर भोजन :
भारतीय संस्कृति के अनुसार जमीन पर बैठकर भोजन करना अच्छी बात होती है

वैज्ञानिक तर्क-
पलती मारकर बैठना एक प्रकार का योग आसन है। इस पोजीशन में बैठने से मस्तिष्क शांत रहता है और भोजन करते वक्त अगर दिमाग शांत हो तो पाचन क्रिया अच्छी रहती है। इस पोजीशन में बैठते ही
खुद–ब–खुद दिमाग से 1 सिगनल पेट तक जाता है, कि वह भोजन के लिये तैयार हो जाये !

हाथ जोड़कर नमस्ते करना –
जब किसी से मिलते हैं तो हाथ जोड़कर नमस्ते अथवा नमस्कार करते हैं।

वैज्ञानिक तर्क-
जब सभी उंगलियों के शीर्ष एक दूसरे के संपर्क में आते हैं और उन पर दबाव पड़ता है। एक्यूप्रेशर के कारण उसका सीधा असर हमारी आंखों, कानों और दिमाग पर होता है,
ताकि सामने वाले व्यक्ति को हम लंबे समय तक याद रख सकें।दूसरा तर्क यह कि हाथ मिलाने (पश्चिमी सभ्यता) के बजाये अगर आप नमस्ते करते हैं तो सामने वाले के शरीर के कीटाणु आप तक नहीं पहुंच सकते।

अगर सामने वाले को स्वाइन फ्लू भी है तो भी वह वायरस आप तक नहीं पहुंचेगा।

भोजन की शुरुआत तीखे से और अंत मीठे से –
जब भी कोई धार्मिक या पारिवारिक अनुष्ठान होता है तो भोजन की शुरुआत तीखे से और अंत मीठे से होता है।

वैज्ञानिक तर्क-
तीखा खाने से हमारे पेट के अंदर पाचन तत्व एवं अम्ल सक्रिय हो जाते हैं इससे पाचन तंत्र ठीक से संचालित होता है
अंत में मीठा खाने से अम्ल की तीव्रता कम हो जाती है इससे पेट में जलन नहीं होती है

पीपल की पूजा –

तमाम लोग सोचते हैं कि पीपल की पूजा करने से भूत–प्रेत दूर भागते हैं।

वैज्ञानिक तर्क-
इसकी पूजा इसलिये की जाती है, ताकि इस पेड़ के प्रति लोगों का सम्मान बढ़े और उसे काटें नहीं पीपल एक मात्र ऐसा पेड़ है, जो रात में भी ऑक्सीजन प्रवाहित करता है

दक्षिण की तरफ सिर करके सोना –

दक्षिण की तरफ कोई पैर करके सोता है तो लोग कहते हैं कि बुरे सपने आयेंगे भूत प्रेत का साया आयेगा, आदि इसलिये उत्तर की ओर पैर करके सोयें !

वैज्ञानिक तर्क-
जब हम उत्तर की ओर सिर करके सोते हैं, तब हमारा शरीर पृथ्वी की चुंबकीय तरंगों की सीध में आ जाता है।

शरीर में मौजूद आयरन यानी लोहा दिमाग की ओर संचारित होने लगता है इससे अलजाइमर, परकिंसन, या दिमाग संबंधी बीमारी होने का खतरा बढ़

जाता है
यही नहीं रक्तचाप भी बढ़ जाता है

सूर्य नमस्कार –

हिंदुओं में सुबह उठकर सूर्य को जल चढ़ाते नमस्कार करने की परम्परा है।

वैज्ञानिक तर्क-
पानी के बीच से आने वाली सूर्य की किरणें जब आंखों में पहुंचती हैं तब हमारी आंखों की रौशनी अच्छी होती है

चरण स्पर्श करना –

हिंदू मान्यता के अनुसार जब भी आप किसी बड़े से मिलें तो उसके चरण स्पर्श करें यह हम बच्चों को भी सिखाते हैं ताकि वे बड़ों का आदर करें !

वैज्ञानिक तर्क-
मस्तिष्क से निकलने वाली ऊर्जा हाथों और सामने वाले पैरों से होते हुए एक चक्र पूरा करती है इसे कॉसमिक एनर्जी का प्रवाह कहते हैं
इसमें दो प्रकार से ऊर्जा का प्रवाह होता है या तो बड़े के पैरों से होते हुए छोटे के हाथों तक या फिर छोटे के हाथों से बड़ों के पैरों तक !

तुलसी के पेड़ की पूजा –

तुलसी की पूजा करने से घर में समृद्धि आती है सुख शांति बनी रहती है।

वैज्ञानिक तर्क-
तुलसी इम्यून सिस्टम को मजबूत करती है लिहाजा अगर घर में पौधा होगा तो इसकी पत्तियों का इस्तेमाल भी होगा और उससे बीमारियां दूर होती हैं।

धन्यवाद

सग्रहकर्ता एवं लेखक – रोबिन सिराना

फेसबुक आई डी

सम्पर्क सूत्र - 9258507777